समता नीति

(श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज)

संगत समतावाद

श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज

जन्म : नवम्बर 24, सन् 1903 ईस्वी

जन्म स्थान : गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा
ज़िला रावलपिण्डी (पाकिस्तान)

महासमाधि : फरवरी 4, सन् 1954 ईस्वी (अमृतसर)

समता नीति

(श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज)

संगत समतावाद (रजि.)

समता योग आश्रम

जगाधरी – 135003

हरियाणा

प्रकाशक
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड, जगाधरी – 135003

© संगत समतावाद

प्रथम संस्करण
द्वितीय संस्करण

प्राप्ति स्थान
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड, जगाधरी – 135003

निवेदन

समता नीति पुस्तक का प्रकाश आने वाले समय में संगत समतावाद के प्रेमी सज्जनों के हितार्थ अति आवश्यक समझते हुए किया गया है, ताकि सिद्धान्त रूप में किसी भी विवाद को पूज्य सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज की सत् आज्ञाओं को सामने रखते हुए स्पष्टीकरण करके दूर किया जा सके ।

इस पुस्तिका में पूज्य सत्गुरूदेव महाराज जी की हस्तलिखित आज्ञाओं ,समता योग आश्रमों में स्थित साधकों के लिए नियम, समता सत्संग विधि, ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के स्वाध्याय के नियम एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के नियमों आदि का संग्रह किया गया है। संगत समतावाद के प्रत्येक प्रेमी के लिये यह पुस्तक सदा-सदा के लिये समता मार्ग एवं समता सिद्धान्त का प्रदर्शन करती रहेगी अर्थात् गाईड बुक का काम करेगी ।

इस पुस्तक के साथ संगत समतावाद के सैंट्रल प्रबन्धक मण्डल (सी. पी .एम) द्वारा स्वीकृत भिक्षु नीति भी संलग्न है, इस नीति के तहत ही आइन्दा (भविष्य में) सेवादार भिक्षु नियुक्त किये जायेंगे जो सदाचारी, परोपकारी, पूर्ण त्यागी और समय का बलिदान करने वाले होंगे और हर तरफ़ जाकर समता के असूलों का प्रचार करेंगे।

पूर्ण आशा है कि सभी समता अनुयाई इस अनमोल आध्यात्मिक सम्पत्ति का वास्तविक लाभ उठायेंगे।

निवेदक

मुखी सेवादार

अक्तूबर, 1995 संगत समतावाद (रजि०)

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
1.	संगत समतावाद के लक्ष्य एवं उद्देश्य	1
2.	संगत समतावाद के सदस्यों के लिए आचार – संहिता	3
3.	संगत समतावाद के सदस्यों के लिए सदस्यता–पत्र	5
4.	संगत समतावाद के अनुयाइयों के वास्ते ज़रूरी हिदायत (आदेश)	6
5.	संगत समतावाद की सैन्ट्रल तन्जीम (केन्द्रीय प्रशासनिक इकाई) के वास्ते ज़रूरी हिदायत	10
6.	ग्रन्थों की स्थापना हेतु ज़रूरी हिदायत	13
7.	समता योग आश्रम, जगाधरी का निर्माण एवं प्रबंधक नियमों का निर्धारण	15
8.	आश्रम सम्बन्धी विशेष–आज्ञा	19
9.	आश्रम सम्बन्धी फरमान (आदेश)	20
10.	आश्रम में गन्दा–खाद न डालने सम्बन्धी आदेश	21
11.	आश्रम में मच्छरदानी न लगाने सम्बन्धी आदेश	22
12.	जीवन बीमा का धन आश्रम के लिए अस्वीकृत सम्बन्धी आदेश	23

पृष्ठ संख्या

13. आश्रम केवल परमार्थ-कार्यों तक ही सीमित रखने सम्बन्धी आदेश 24
14. समता योग साधना स्थल, तपोभूमि, राजपुर (देहरादून) का निर्माण एवं उसके सत्-नियम 26
15. आश्रमों की प्रबन्धक-नीति 28
16. आश्रम ट्रस्ट का निर्माण 30
17. संगत समतावाद के प्रबन्धक मण्डल के नियम 32
18. प्रबन्ध कार्यों के कार्यकर्ता प्रेमियों के लिए नियम एवं संगत को रजिस्टर्ड कराने का आदेश 33
19. समता योग आश्रम जगाधरी के समता सत्संग सम्मेलन की तिथि निश्चित करने सम्बन्धी आदेश 35
20. सम्मेलन लंगर सम्बन्धी आदेश 36
21. समता सत्संग विधि सम्बन्धी आदेश 38
22. समता सत्संग नीति सम्बन्धी आदेश एवं सत्संग निर्णय 39
23. संगत कार्यकर्ता - प्रेमीजनों के लिए सत् शिक्षा 43
24. समतावादी प्रेमियों के लिए शिक्षा 44
25. समतावादी प्रेमियों के लिए आदेश 46
26. शिष्यों की कड़ी परीक्षा सम्बन्धी चेतावनी 47

पृष्ठ संख्या

27. आम प्रचार का प्रोग्राम बन्द करने सम्बन्धी चिन्तन 49
28. सदाचारी जीवन बनाने हेतु आदेश 50
29. सत् असूलों से पतित हो जाने एवं गुरु दरबार से जी चुराने वाले प्रेमी के लिए चेतावनी 53
30. नाम-दान देने की मनाही 55
31. अधूरी हालत में मार्गदर्शन की मनाही 58
32. रुहानी हालात बताने की मनाही 60
33. ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के स्वाध्याय एवं पाठ सम्बन्धी नीति 61
34. ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के अन्तिम पृष्ठ पर चेतावनी-वचन 64
35. भिक्षु सम्बन्धी वार्तालाप 65
36. श्री सत्गुरुदेव महाराज जी की कुछ हिदायतें 69
37. संगत समतावाद की भिक्षु नीति 72
38. मृतक संस्कार के बारे में आदेश 79
39. विवाह नीति 81

1.
संगत समतावाद के लक्ष्य एवं उद्देश्य

1. संगत समतावाद पूज्य श्री सत्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज द्वारा स्थापित है। मानव मात्र में शाश्वत सत्य के स्थापन तथा अखिल सामाजिक जीवन के सुधार के लिए अपने सदस्यों में श्री सत्गुरुदेव महाराज जी के उपदेशों में संग्रहित सार्वभौमिक, अध्यात्मिक ज्ञान जागृत एवं दृढ़ करना तथा जनसाधारण में उसका प्रचार एवं प्रसार करना 'संगत समतावाद' का लक्ष्य है।

2. सत्य के मूल-भूत सिद्वान्तों को पालन करने का हर प्रकार से प्रचार करना और हर सम्प्रदाय (मज़हब) मत व पंथ को समभाव से देखना संगत समतावाद का उद्देश्य है।

3. संगत के सदस्यों में इस बात का प्रचार करना कि वह अपना जीवन निर्विकारी बनावें तथा दूसरों का कल्याण चाहना अपना मुख्य कर्तव्य समझें।

4. भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक (मज़हबी) व देशीय (मुल्कों) रीति-रिवाजों के तंग दायरों से जनता को आज़ाद कराना और उसको बाद-मुबाद (वाद विवाद) से छुटकारा हासिल कराना तथा निष्काम भाव से सत् कर्मों में जनता का दृढ़ विश्वास बढ़ाना संगत समतावाद का उद्देश्य है।

5. समभाव ही कल्याण है, समभाव ही जीव का वास्तविक स्वरूप

है और परमधाम है, समभाव ही धर्म है, समभाव की प्राप्ति में यत्न करना ही गुरमुख मार्ग है। इस कारण इस संस्था का यह कर्तव्य है कि समता के सिद्धान्तों (असूलों) का प्रचार करे और इस प्रकार से जनता को वास्तविक शान्ति की ओर ले जावे। समता के मुख्य सिद्धान्त यह हैं कि शरीर की इन्द्रियगम्य समस्त वस्तुओं को नाशवान जानना और जिस सर्व आधारभूत शक्ति के आसरे यह शरीर तथा समस्त संसार खड़ा है, केवल मात्र वह शक्ति ही सत्य है, ऐसा दृढ़ निश्चय से मानना और इसी सत्य की अनुभूति के लिए समता के पांच मूल-भूत साधन - सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण पर मन, वचन और कर्म से दृढ़ रहना।

6. पूज्य श्री सत्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी के समता के सिद्धान्तों (असूलों) का प्रचार देश देशान्तर में करना और इसके लिए दूसरों देशों में भी अपनी संस्था एवं शाखाएं स्थापित करना और भिक्षु बनाना।

7. समतावाद के उद्देश्यों के प्रचार एवं प्रसार के लिए वार्षिक, अर्धवार्षिक, मासिक, अर्धमासिक, साप्ताहिक व दैनिक पत्रिकाएं इत्यादि निकालना तथा पुस्तकें व पुस्तिकाएं इत्यादि छपवाना।

8. संस्था के उद्देश्यों की सफलता एवं प्रचार के लिए प्रत्येक नियमानुकूल ढंग से सम्पत्ति प्राप्त करना।

2.
संगत समतावाद के सदस्यों के लिए आचार संहिता

1. मांस, शराब, अण्डा, मछली, सिनेमा, थियेटर, रास, तमाशे, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, एवं तमाम प्रकार की अन्य नशीली वस्तुओं को बिल्कुल इस्तेमाल न करने वाला हो।

2. संगत समतावाद का कायम करदा दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक सत्संग-सम्मेलनों में बाकायदा शामिल होता हो एवं इनमें हर तरह से प्राथमिकता देता हो।

3. श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज को सत् मार्ग की रहबरी के लिए अपना एक मात्र रहबर (सत्गुरु) मानता हो।

4. श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी की आत्म-अनुभवी वाणी जो ग्रन्थ श्री समता-प्रकाश व ग्रन्थ श्री समता विलास के रूप में संग्रहीत है, में पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था रखता हो और इन दोनों सत्ग्रन्थों का स्वाध्याय आत्म-निश्चय भाव को प्राप्त करने हेतु करता हो।

5. जो कथनी मात्र गुरु सत्-स्थिति को प्राप्त नहीं हुए हैं ऐसे गुरुओं एवं महन्तों के गुरुपद और महंताई में बिल्कुल विश्वास रखने वाला न हो। इसके अलावा यदि कोई सज्जन पहले किसी उपरोक्त तरह से गुरु या महन्त द्वारा दीक्षा प्राप्त कर चुका हो परन्तु अब उनको अपना आध्यात्मिक रहबर न मानता हो, वह भी संगत समतावाद का प्रेमी (सदस्य) बन सकेगा।

6. जो संगत समतावाद के मूल सिद्धान्तों एवं नियमों का पालन करने में सलंग्न हो तथा संगत समतावाद के अनुशासन में रहकर संगत उन्नति में सहायक हो।

7. संगत समतावाद के संचालनार्थ तथा उसके आश्रमों, सत्संग शालाओं एवं सेवा केन्द्रों की देख-रेख एवं संस्था के उद्देश्यों के प्रचार और प्रसार हेतु संगत द्वारा नियत अंशदान अनिवार्य रूप से देता हो। इसके अलावा संगत के साप्ताहिक सत्संगों में उसकी उपस्थिति कम से कम साठ प्रतिशत हो।

3.

सदस्यता पत्र

समता अपार शक्ति

नं० ऊँ ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार तिथि .....

संगत समतावाद
प्रधान कार्यालय :
समता योग आश्रम, जगाधरी (हरियाणा)

मैं .....

पुत्र .....

निवासी .....

सर्वनियन्ता परमेश्वर सत्ता एवं सत्पुरुष श्री सत्गुरुदेव महाराज मंगतराम जी को सर्व साक्षी करते हुए, आत्म-अनुभवी वाणी श्री 'समता प्रकाश व समता विलास ग्रन्थों में पूर्ण श्रद्धा रखते हुए नत्मस्तक हूँ। मैं संगत समतावाद के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को स्वीकार करते हुए यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस संस्था द्वारा नियत आचार-संहिता का पालन करूँगा।

इसलिए एतद् द्वारा प्रार्थना करता हूँ कि मुझे संगत समतावाद का नियमानुसार (बाकायदा) सदस्य बना लिया जावे।

सिफ़ारिश करने वाले के हस्ताक्षर, नाम व पता .....

पुष्टि करने वाले के हस्ताक्षर, नाम व पता .....

प्रार्थी

हस्ताक्षर .....

4.

श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी द्वारा निर्धारित समतावाद के अनुयाईयों के वास्ते ज़रूरी हिदायतें (आज्ञाएं)

1. सुबह व शाम प्रेम से ईश्वर का सिमरण करना।
2. बीमार, अनाथ, अतिथि, बेवा (विधवा) और दीगर मुसीबतज़दा की निष्काम भावना रखकर प्रेम से सेवा करना।
3. आपस में जब मिलें तो 'ब्रह्म सत्यम् सर्व आधार' का उच्चारण करें।
4. नाजायज़ (अनुचित) मान्यताओं को रोकने की कोशिश करनी।
5. समता की रोशनी को फैलाने की दिलोजान से कोशिश करनी।
6. सत्संग रोज़ाना (नित्यप्रति) होना चाहिए। हफ़्तावारी (साप्ताहिक) सत्संग बड़े आला-पैमाने पर (बढ़ चढ़कर) होना चाहिए।
7. हर एक समाज के प्रेमियों को सत्संग में शामिल करना चाहिए।
8. जिस समाज में बाद-मुबाद (वाद-विवाद) होवे उस जगह हरगिज़ (बिल्कुल) न जायें।
9. सत्संग में जिस जगह जो प्रेमी बैठे (बैठा हो) किसी को उस जगह से उसको उठाने का हक (अधिकार) न होगा।

10. सत्संग में ज़रूरी कोई न कोई प्रसाद बांटना चाहिए।

11. जो कार्यवाही शुभ कार्य की करो, पहले महामन्त्र उच्चारण करें।

12. जो विचार समता के अनुकूल होवे उसको सुनो। विवाद वाली तालीम को हरगिज़ स्वीकार न करो।

13. हर एक मनुष्य से दिलोजान से हार्दिक मोहब्बत करनी।

14. सेवा करनी, हक-शनासी करनी, सत्संग करना और अपने आचार को दुरस्त करना हर एक समतावादी सज्जन पुरुष का पहला फ़र्ज़ है।

15. जिस जगह संगत समतावाद होवे, उस जगह सत्संगशाला जरूर होवे। सादगी, सेवा, सत्, सत् विश्वास, सत्संग (एवं) सत् सिमरण इन असूलों को हर वक़्त धारण करने की कोशिश करनी।

16. सच्चा जीवन, आनन्द स्वरूप और सब दु:खों का नाश करने वाला, 'समता-विचार' है। हर एक मनुष्य उसको धारण करके संसार में आने का यथार्थ लाभ उठाए।

17. सत्संग में हर एक प्रेमी अपना विचार ज़ाहिर कर सकता है और हाज़िर संगत ग़ौर करके विचार को श्रवण करने की कोशिश करे।

18. किसी पर रौब डालने का किसी को हक (अधिकार) नहीं होगा बल्कि प्रेम से विचार होना चाहिए। अगर कोई प्रेमी बिना वजह सत्संग में हाज़िर न होवे, वह संगत में माफी मांगने का दण्ड

स्वीकार करे।

19. संगत जिस प्रोग्राम को पास करे हर एक प्रेमी को तन, मन करके उस पर अमल करना होगा।

20. सत्संगशाला में राग की कोई मशीनरी (बाज यन्त्र) ना होवे। विचार खुला होना चाहिए। हर एक महापुरुष की ज़िन्दगी का विचार करना ज़रूरी है। सत्संगशाला में कोई फोटो न होवे बल्कि हिदायत (उपदेश) के शब्द ज़रूरी नक्श (अंकित) हों। हर एक गुणी पुरुष को अपने गुण को प्रकट करने का हक है।

21. अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा निकालकर धर्म खाते में रखें। यतीम, अनाथों एवं धर्म की जिसमें उन्नति होवे ख़र्च करें।

22. सत्संग में जो विचार मुकर्रर (निश्चित) किए गए हैं उनका विचार करना ज़रूरी है।

23. जो भी नेक काम करना होवे, जितना जल्दी हो सके, कर लेवे। कोई खास मुहूर्त की जरूरत नहीं है।

24. रास, सिनेमा, थियेटर देखना बिल्कुल बन्द करना और दूसरों को रोकने की कोशिश करनी।

25. सब मनुष्यों के अन्दर एकता पैदा करनी प्रेमियों का लाज़मी फ़र्ज़ है।

26. सब मनुष्यों के अन्दर सत्कर्म के जज़्बात (भावना व रूचि) पैदा करना।

27. किसी को सबक सिखलाने की ख़ातिर पहले ख़ुद अमल किया जाता है।

28. सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह है कि जमात (संगत) में शामिल होना।

29. मूर्खों की जमात को अपनी आला (उच्च) कुर्बानी से सुधारना।

30. सत्पुरुषों की जमात में अपनी बुद्धि को निर्मल करना।

31. धर्म का स्वरूप उपकार है यानि गर्ज़ से रहित होकर सत्कर्म को हर जगह अपने पाकीज़ा ख़्यालात (पवित्र विचार) को फैलाना।

32. जमात के साथ चलने में बड़ी बुज़ुर्गी (महानता) है। अलेहदगी (एकाकीपन) बेज़ारी देने वाली है। अपनी ज़िन्दगी में अपने जीवन को नमूना बनावें।

33. सच्चाई को सुनना फिर हर एक को आगाह करना (जानकारी देना) निहायत ही ज़रूरी है।

34. अपनी ज़िन्दगी को अमली बनाना, देश का सुधार, धर्म का सुधार सत्संग से ही है।

5.

श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी द्वारा निर्धारित संगत समतावाद की सैन्ट्रल तन्ज़ीम के वास्ते ज़रूरी हिदायत (आदेश)

समतावाद की सैन्ट्रल तन्ज़ीम (केन्द्रीय प्रशासन इकाई) बनने से पहले श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज ने अपने कुछ विचार एवं आदेश समतावादी प्रेमियों के लिए स्थानीय संगत समतावाद की इकाईयों के लिए फ़रमाए, वह नीचे दिए गए हैं :-

1. (संगत) समतावाद का हर एक मैम्बर समता के लिटरेचर से वाकफ़ियत हासिल करने की बड़ी से बड़ी कोशिश करे और समता के असूलों पर कारबन्द रहे।

2. किसी समतावाद को किसी दूसरी समतावाद से दान मांगने का हक नहीं है। अगर कोई समतावादी मैम्बर अपनी ख़ुशी से किसी दूसरी समतावाद को दान देवे तो दे सकता है।

3. अगर कोई समतावाद रसाला या अखबार या ट्रैक्ट छपवाना चाहे तो वह अपनी सोसाइटी (स्थानीय संगत समतावाद) के ख़र्च पर छपवा सकता है। दूसरी समतावादों से उग्राही (वसूली) कोई नहीं कर सकती।

4. जो प्रचार के ख़ातिर परचा होवे वह कीमतन दूसरे समतावादों को दे सकता है अगर मुफ्त न देवे।

5. पहले हर एक मैम्बर समतावाद का हक है कि निष्काम भाव से

सेवा करनी। अगर सामर्थ्य से बाहर हो तो कीमत जायज़ वसूल कर सकता है, उस अपनी मेहनत की।

6. जो समता (समता सिद्धान्त) अनुकूल रसाला या ट्रैक्ट होवे तो हर एक संगत समतावाद का सदस्य लेकर मुतालया कर सकता है। अगर बरखिलाफ (समता सिद्धान्त के विपरीत विचारों का) होवे तो फिर किसी को मुतालया (अध्ययन) करने या खरीदने का कोई हक नहीं।

7. अगर किसी ख़ास मौके पर किसी समतावादी को समता (सिद्धान्त) की उन्नति की ख़ातिर ख़ास ज़रूरत पड़े तो उस वक़्त संगत में अपील कर सकता है और हर एक समतावादी मैम्बर अपनी हस्वमंशा (इच्छानुकूल) ज़रूरी सेवा करे।

8. अगर वह समतावादी मैम्बर उस उगाही से समता के अनुकूल कार्यवाही न करे तो उसका असर उसकी अपनी ज़िन्दगी पर है न कि संगत समतावाद पर। ऐसे हालात को मद्देनज़र (ध्यान में) रखना ज़रूरी है।

9. हर एक समतावादी मैम्बर अपने आप हो हर एक समतावाद में मैम्बर बना सकता है यानि तमाम समतावाद का दायरा एक ही है।

10. सोसायटी की सेवा निष्काम भाव से करनी हर एक मैम्बर का फ़र्ज़ है। समता (सिद्धान्त) की रोशनी निष्काम ही है।

11. हर एक समतावादी मैम्बर दूसरी समतावादों के मैम्बरान से

सत्संग विचार ज़रूरी किया करे। हाज़िर संगत होकर या बज़रिया पत्र (पत्र व्यवहार द्वारा)।

12. जिस समतावादी मैम्बर को ईश्वर ने सामर्थ दी होवे वह अपनी सच्ची अकीदत (श्रद्धा) से हर एक समतावादी और दूसरे अधिकारियों की सेवा करना अपना ख़ास फ़र्ज़ समझें।

13. हर एक समतावाद के रिकार्ड में तमाम जगह ही समतावाद के मैम्बरान की फ़ैहरिस्त (सूची) होनी लाज़मी है।

14. अपनी श्रद्धा से समता धर्म की ख़ातिर ख़्वाहे बड़ी से बड़ी तन, मन, धन से सेवा करे कोई मुमानियत (मनाही) नहीं बल्कि फ़र्ज़ है। मगर सामाजिक कार्यवाही उन उसूलों के मुताबिक होना ज़रूरी है। इससे ख़ुद्दारी (स्वाभिमान) और ख़ुदगर्ज़ी (स्वार्थीपन) पैदा नहीं होती बल्कि हर एक को अपना फ़र्ज़ (कर्तव्य) याद रहता है।

6.

समता सिद्धान्त के दोनों ग्रन्थ श्री समता प्रकाश एवं श्री समता विलास को भगत बनारसी दास जी द्वारा संकलन कराने के उपरान्त संगत समतावाद को उसकी सुरक्षा एवं समता स्थान की स्थापना के बारे में भी श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज का सत् आदेश का देवनागरी रूपान्तर

समय – ग्रीष्म ऋतु सन् 1948 ईस्वी

स्थान – सिद्ध खड्ड मंसूरी, जिला देहरादून

आज्ञाकारी प्रेमी संगत (समतावाद) देहली,

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर आज्ञा से समता सिद्धान्त शास्त्र तमाम वाणी और नसर मुकम्मल करके श्री अमोलक राम की सुपुर्दगी में रवाना किया जाता है। तमाम प्रेमी इसकी पूर्ण हिफ़ाज़त का विचार कर लेवें और सत् विचार से अपने आपको और दूसरों को भी आनन्दित करें। ग्रन्थ श्री समता विलास और समता विज्ञान योग की फिलहाल (अभी) छपवाई होनी है। पूर्ण श्रद्धालु प्रेमियों ने सेवा ली है और अमोलक राम की ज़िम्मेवारी में छपवाई होवेगी। जिस-जिस प्रेमी को छपवाई के मुत्तलिक कुछ शारीरिक सेवा बन आवे ज़रूरी हिस्सा लें और लिटरेचर की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) के वास्ते किसी महफ़ूज़ जगह (सुरक्षित स्थान) का भी विचार करें और वहां ही

रखवाना ज़रूरी होगा।

'समता स्थान' के बारे में भी विचार करें। आज्ञा ईश्वर से इसके मुत्तलिक अमोलक राम को अनुकूल हिदायत (निर्देश) से वाज़या (अवगत) किया गया है। ईश्वर नित ही सत् धर्म विश्वास देवे और गुरु वाणी के विचार द्वारा अपने आपको नित् ही पवित्र करें। ईश्वर नित् ही सहायक होवे।

हस्ताक्षर (मंगतराम)

अज़ मंसूरी

7.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा समता योग आश्रम जगाधरी का निर्माण एवं इस हेतु सार एवं प्रबन्धन नियमों का निर्माण

सार नियम

1. यह समता योगाश्रम समता अनुयाई प्रेमियों के वास्ते एकत्र होकर सत् बोध प्राप्त करने और विरक्त प्रेमियों के वास्ते सिमरण अभ्यास की ख़ातिर एक एकान्त स्थान कायम किया गया है। आश्रम की हद (सीमा) के अन्दर किसी किस्म की मुनश्यात, मादक एवं नशीले पदार्थ सेवन और मांस भक्षण की बिल्कुल बंदिश (मनाही) है और समता के विरूद्ध कोई भी कार्यवाही आश्रम में नहीं होनी चाहिए।

2. किसी अजनबी को आश्रम में ठहरने का हुक्म नहीं है। अगर मज़बूरी से कोई ठहरना चाहे तो सिर्फ़ एक दिन-रात ठहर सकता है। पूरी जांच पड़ताल के बाद।

3. सत्संग आश्रम में रोज़ाना होना चाहिए और माहवारी सत्संग विस्तारपूर्वक होना चाहिए। सत्संग का नियम सत् बोध प्राप्ति की ख़ातिर होना चाहिए न कि एक व्यवहार का स्वरूप कायम कर लिया जावे। हर एक प्रेमी का ऐसा भाव होना चाहिए।

4. सम्मेलन सालाना होना चाहिए। अगर संगत का प्रेम भाव हो तो साल में दूसरी दफ़ा भी एकत्र हो सकते हैं। समयानुकूल विचार

कर लेना चाहिए। वैसे प्रेमी हर वक़्त आश्रम में आ-जा सकते हैं, अपनी मानसिक शान्ति की ख़ातिर।

5. सम्मेलन के दौरान आश्रम के अहाते में स्नान की पाबन्दी होनी चाहिए, दूसरी ज़मीन में संगत के नहाने व कपड़े धोने वग़ैरा का प्रबन्ध होना चाहिए।

6. माताओं को रात के वक़्त आश्रम में ठहरने का हुक्म नहीं है सिर्फ सम्मेलन के लंगर की सेवा की ख़ातिर रात को अगर काम होवे तो आश्रम में रात को काम करते हुए समय व्यतीत कर लेवें तो कोई पाबन्दी नहीं है। माताओं के वास्ते दूसरी ज़मीन में ठहरने का इन्तज़ाम होना चाहिए।

आश्रम में अनुयाई सज्जनों की स्थिति

1. जो समय अभ्यास के वास्ते वक्फ (निकाला जाए) किया जावे, उस समय आश्रम में ठहर कर अपना-अपना ख़र्च इस्तेमाल करें और ख़ास वजह से कोई प्रेमी ख़र्च बरदाश्त न कर सके तो उसका इन्तज़ाम गुरु लंगर से होवे और अभ्यास के समय के बाद में अपनी यथा भावना आश्रम से जाना चाहें तो जा सकते हैं। कोई पाबन्दी नहीं है। ज़्यादा समय अगर कोई प्रेमी ठहरना चाहे तो 'आश्रम-प्रबन्धन' द्वारा आज्ञा लेकर ठहर सकता है।

समता योग आश्रम के प्रबन्धन सत् नियम

1. यह समता योगाश्रम समता अनुयाई प्रेमियों के वास्ते एकत्र होकर सत्बोध प्राप्त करने की ख़ातिर और विरक्त प्रेमियों के वास्ते

सिमरण अभ्यास की ख़ातिर एक एकान्त स्थान कायम किया गया है।

2. हिफ़ाज़ती इन्तज़ाम की ख़ातिर कमेटी की मुकर्ररी (नियुक्ति) 3 या 5 या 7 ख़ास सेवादारों की कमेटी बना ली जावे जो सब इन्तज़ाम को मुकम्मल करने में सत् यत्न धारण करते रहें और अपनी निर्मल सेवा का सबूत देवें।

3. अगर मुलाज़िम के ज़रिए हिफ़ाज़ती इन्तज़ाम किया जाये तो उसकी तनख्वाह संगत बरदाश्त करे और उस पर पूरा-पूरा कन्ट्रोल भी होना चाहिए। इसके अलावा अगर कोई प्रेमी अपनी ज़िन्दगी आश्रम सेवा में वक़्फ़ करना चाहे तो उसके वास्ते पहले कुछ समय अपना ख़र्च ख़ुद उठाकर निष्काम सेवा करे। बाद में उस प्रेमी की परम-दृढ़ता और सत् अनुराग का जायज़ा (जांच) लेकर संगत उसके ख़र्च को बरदाश्त करे और कमेटी के प्रेमी भी हिफ़ाज़त (सुरक्षा) की सेवा को सर अन्जाम देवें।

लंगर का इन्तज़ाम

1. 7 दिनों में भिन्न स्वरूप की रसोई साधारण रूप की मुकर्रर कर ली जावे और रसोई की तैयारी में हाज़िर प्रेमी ज़रूरी कुछ न कुछ सेवा करें। इससे प्रेम बढ़ता है और समता का आदर्श कायम होता है और जो कोई बीमार होवे तो उसके वास्ते अनुकूल भोजन होना चाहिए।

2. हिफ़ाज़ती इन्तज़ाम व सम्मेलन का तमाम प्रबन्ध श्री सत्गुरुदेव जी महाराज की आज्ञा लेकर कमेटी और दीगर (अन्य) तमाम

प्रेमी सरअन्जाम देवें (पूरा करें) और साथ – साथ अपने आपको निर्मल त्याग के मार्ग में दृढ़ करते जावें।

3. कमेटी को जो काम करना होवेगा, वह श्री सत्गुरुदेव जी महाराज की आज्ञा से ही करना होगा। अपने आप वह ही कर सकते हैं जिसका नतीजा सही मालूम होवे और कोई ख़ास दुशवारी (अड़चन) का सामना न करना पड़े।

4. तमाम संगत आश्रम को तीर्थ स्वरूप जानकर उसका हर तरीके से हिफ़ाज़ती इन्तज़ाम करने की पूरी–पूरी इमदाद (सहायता) करे ताकि समता का स्थान (समता सिद्धान्त को प्रतिपादित करने हेतु निर्मित स्थान) निर्मल धर्म के स्वरूप में प्रकाशक होकर देश के वास्ते कल्याणकारी हो सके।

5. हालात के मुताबिक और समय के मुताबिक, लंगर के मुत्तलिक (बारे में), अभ्यासी सज्जनों के मुत्तलिक और समता के प्रचार के मुत्तलिक जो–जो विचार मुनासिब (ठीक) हुए वे नियम के स्वरूप में प्रकाशक (प्रकाशित) होते रहेंगे।

6. बनारसी दास व अमोलक राम जी कमेटी के बीच में रहें या बाहर ज़्यादातर ज़िम्मेवारी फिलहाल इनके ही सिर पर है।

7. ईश्वर अधिक श्रद्धा देवे ताकि निर्मल सेवक रूप होकर सेवा करके अपने जीवन सफल करें और समता की रोशनी की निर्मल किरण बन करके संगत सेवा का सही फल दीनता प्राप्त कर सकें। आगे जो आज्ञा परम–पुरुष की। नित् ही सुमति अर्न्तवास हो।

सेवक – सत्गुरु चरण निवासी बनारसी दास

जगाधरी, दिनांक 10–11–1950

8.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रम सम्बन्धी विशेष आज्ञा

1. (आश्रम की सीमावर्ती) दीवार फांदना सख़्त मना है।
2. (आश्रम में) माताओं का नंगे सिर आना सख़्त मना है।
3. (आश्रम में) बाईसिकल वग़ैरा (वाहन इत्यादि) पर सवार होकर आना सख़्त मना है।
4. अहाता आश्रम (आश्रम क्षेत्र) में मल-मूत्र का त्याग करना सख़्त मना है।
5. आश्रम में सिगरेट, बीड़ी, मदिरा-पान करना सख़्त मना है।

9.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रम सम्बन्धी फ़रमान

1. (आश्रम भूमि) ज़मीन को व्यवहारिक रूप न देना।

2. चूंकि कई किस्म के कानून बनने वाले हैं, इसलिए बैरूनी (बाहिर की) ज़मीन में भी बाग लगा देना। इससे ज़मीन महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहेगी।

3. (आश्रम प्रबन्ध) यहां के ख़र्च यहीं से निकालना।

4. (संगत व आश्रम का) रूपया जमा न करना।

5. हाल (कमरा) उस जगह बनवाना जहाँ सम्मेलन के दौरान सत्संग किया जाता है उस जगह के मगरिबी तरफ़ बनवाना, नौकरों की रिहायश (निवास) के लिए परले शुमाल मगरिबी (उत्तर पश्चिमी) कोने में कमरे बनवाना।

6. लाइब्रेरी के ऊपर कमरा बनवा देना। ऐसा समय आने वाला है जब फ़कीर कहीं आ जा नहीं सकेंगे। सिलसिला आम्दोरफ़्त बन्द हो जावेगा। फ़कीर एक तरफ़ आसन पर बैठे रहेंगे, किसी से मिलेंगे-जुलेंगे नहीं।

10.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रम में गन्दा खाद न डालने सम्बन्धी आदेश

1. आश्रम अहाते में बाहर और अन्दर ज़मीन में 'गन्दा खाद' न डाला जावे बल्कि गोबर का ही खाद दिया जावे। विशेषतया इस जगह की पवित्रता का ध्यान रखा जाये क्योंकि प्रेमियों ने इस जगह ज़मीन पर ही लेटना है। इसलिए गन्दा खाद न डाला जाये।

11.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रम में मच्छरदानी न लगाने सम्बन्धी आदेश

(श्री सत्गुरुदेव महाराज ने एक पत्र द्वारा आश्रम में मच्छरदानी न लगाने के बारे में एक प्रेमी को आदेश फ़रमाया)

1. आश्रम में मच्छरों की तकलीफ़ को बरदाश्त ही करें। अगर मच्छरदारी लगानी हो तो आश्रम छोड़कर घर लौट जावें। तुम जैसे नाजुक अन्दाम (आरामतलब जीवन जीने की चाह रखने वाले) समता के मार्ग में क्या करेंगे।

12.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत जीवन बीमा का धन आश्रम के लिए अस्वीकृत सम्बन्धी आदेश

(एक समता प्रेमी ने अपनी लाइफ इन्श्योरेंस की पॉलिसी (जीवन बीमा) संगत समतावाद को देनी चाही। इस पर श्री सत्गुरुदेव महाराज ने निम्न आदेश दिया।)

1. मुर्दों का रुपया आश्रम के लिए नहीं लिया जाता इसलिए बीमा का रुपया नहीं लिया जाएगा।

13.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रमों को केवल परमार्थ-कार्यों तक ही सीमित रखने सम्बन्धी आदेश (दिनांक 10-2-1952)

1. (अमुक प्रेमी) के मुताबिक जो लिखा है वाज़े होवे कि आश्रम को सिर्फ़ परमार्थ कार्य तक ही महदूद (सीमित) रखना चाहिए और किसी किस्म के भी पारिवारिक कार्य ऐसे त्याग आश्रम के वास्ते शोभादायक नहीं है - अच्छी तरह से विचार कर लेवें। इसका असर तुम्हारी ख़ुद की ज़िन्दगी और आश्रम दोनों के वास्ते ना मौजूं (अनुपयुक्त) है। इस वास्ते स्वार्थ कार्य के लिए आश्रम में आज्ञा नहीं हो सकती है।

अज़ सिद्ध खड्ड, मंसूरी
दिनांक 5-6-1951

2. आश्रम में मुण्डन संस्कार के रिवाज़ का कायम करना, यह एक मन्द निश्चय और तोहमात परस्ती (पाखण्ड पूजा) है। इस वास्ते आइन्दा (आगे के लिए) हर एक प्रेमी अपने अपने घर में ही 'मुण्डन संस्कार रीति' सत्संग करके कर सकता है अगर सादगी, समता (समता सिद्धान्त) के अनुकूल करना चाहे तो। आश्रम तो सिर्फ़ परमार्थ के साधन के वास्ते ही है। वहाँ सत्संग, सिमरण व ध्यान आदि ऊँचे कर्तव्य ही होने योग्य हैं। इस वास्ते आश्रम में महज़ मुण्डन संस्कार की रीति को जारी करवाने की पाबन्दी से आज़ाद होना चाहिए और न ही किसी 'स्वार्थ-कार्य'

के आरम्भ करने की वहां इज़ाज़त दी जाती है। तमाम प्रेमियों को बोध होना चाहिए। ईश्वर सुमति देवे।

अज़ हल्द्वानी
दिनांक 10-3-1952

14.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा समता योग साधना स्थल, तपोभूमि, राजपुर (देहरादून) का निर्माण एवं उसके सत्-नियम

1. तपोभूमि की हद (सीमा) में तमाम मुनश्यात (सब नशीले पदार्थ) और मांस भक्षण की पूरी-पूरी पाबन्दी है।

2. तपोभूमि में तमाम देहरादून निवासी प्रेमी माहवारी सत्संग कायम रखें।

3. ख़ास त्यौहारिक सत्संग के बग़ैर माताओं को तपोभूमि में शामिल होने की इजाज़त न होगी।

4. माताओं को नंगे सिर तपोभूमि की हद (सीमा) में दाखिल होने की इजाज़त न होगी और न ही रात को ठहरने की।

5. जो-जो समतावादी तपस्या के ख़ातिर तपोभूमि में ठहरना चाहे वह अपना ख़र्च ख़ुद बरदाश्त करें।

6. ख़ास (विशेष) कोई विरक्ति रूप में प्रेमी होवे तो उसका ख़र्च देहरादून के प्रेमी बरदाश्त करें।

7. किसी अजनबी (अनजाना व्यक्ति) को तपोभूमि में रात को ठहरने की इजाज़त न होगी।

8. अधिक समां (समय) कोई तपोभूमि में रात को ठहरने की इजाज़त न होगी।

9. तपोभूमि में पलंग वग़ैरा और दीगर (दूसरे) तमाम किस्म का हर फर्नीचर बिछाने की इजाज़त न होगी।

10. समता के पांच असूलों यानि सादगी, सत, सेवा, सत्संग और सत्-सिमरण का सही उपयोग पूर्ण रूप में तपोभूमि में होना चाहिए।

11. सैर व तफरी (पिकनिक, मनोरंजन इत्यादि) चौपट (ताश) और किसी किस्म की भी सदाचारी जीवन के विरूद्ध कार्यवाही करने के लिए मुत्तलिक (बिल्कुल) इजाज़त नहीं है।

12. तमाम समतावादी प्रेमी इन सत् असूलों पर पूरे-पूरे कारबन्द (कायम) रहें।

15.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रमों की प्रबन्धक-नीति (दिनांक 22-6-1952)

समता योग आश्रम की प्रबन्धक नीति

1. श्री सत्गुरुदेव महाराज की आज्ञानुसार अपनी आध्यात्मिक उन्नति के वास्ते समता योगाश्रम, जगाधरी में संगत ने कायम किया है जो कि संगत का ही परम पूज्य स्थान है और इसके प्रबन्ध के वास्ते संगत ही ज़िम्मेदार है।

2. आइन्दा ज़माने में आश्रम की बाहतमाभी (प्रबन्ध) एक शख़्स (व्यक्ति) के नाम दुविधा का कारण है और आश्रम के प्रबन्ध के वास्ते भी हानिकारक है। इस वास्ते आश्रम के प्रबन्ध के वास्ते ट्रस्ट होना चाहिए।

3. ट्रस्ट में ऐसे प्रेमी शामिल होने चाहिएं जिन्होंने अपना तमाम जीवन संगत सेवा में अर्पण किया हो या जो अपनी कमाई का दसवन्ध गुरु आज्ञानुसार संगत सेवा या आश्रम सेवा में भेंट करते चले आए हों या आइन्दा अपनी कमाई का दसवन्ध आश्रम सेवा में भेंट करना चाहते हों और आश्रम को निश्चयपूर्वक पूज्य स्थान समझते हों और समता के सत् नियमों के पूर्ण अनुयाई हों, तो ऐसे परम श्रद्धावान चन्द प्रेमियों के नाम आश्रम ट्रस्ट में होने चाहिएं और इस तरह जब किसी मैम्बर की तबदीली होवे तो ऐसे ही श्रद्धावान प्रेमी को ट्रस्ट में शामिल करना चाहिए और संगत के वास्ते ऐसे मैम्बरों का उत्साह आश्रम प्रबन्ध में बढ़ाना अधिक

लाज़मी है। तब ही आश्रम का प्रबन्ध समता के नियमों के अनुकूल शुद्ध रीति से चलता रहेगा।

4. संगत जिस वक़्त भी चाहे ट्रस्ट कायम कर सकती है। सत्गुरुदेव महाराज जी की पूर्ण आज्ञा संगत के वास्ते है। सब संगत को इस प्रबन्धक प्रोग्राम का बोध होना चाहिए।

5. यह नीति बतौर चेतावनी आइन्दा ज़माने में आश्रम के प्रबन्ध के मुत्तलक तहरीर (निश्चित) कर दी जाती है, जिस पर तमाम प्रेमी कारबन्द रहें।

16.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आश्रम ट्रस्ट का निर्माण (दिनांक 25-9-1953)

1. तमाम संगत समतावाद को वाज़े होवे कि आइन्दा को समता योगाश्रम, जगाधरी व समता योगाश्रम, राजपुर (देहरादून) या और कोई नया आश्रम अगर कायम होवे जो सेन्टर के मातेहत (अन्तर्गत) हो, उन सबका इन्तज़ाम एक ट्रस्ट के ज़रिये ही होगा।

2. ट्रस्ट के तमाम मैम्बर अपने-अपने फ़र्ज़ को समझते हुए आश्रमों के प्रबन्ध में पूरा-पूरा यत्न करें। कुछ समय तक प्रेमियों की श्रद्धाभाव का अमली स्वरूप देखा जावेगा। तब ट्रस्ट (न्यास) बाकायदा अदालत में रजिस्टर करवा दिया जावेगा। लिहाज़ा आज से तमाम ट्रस्टी मैम्बरान अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी सम्भाल लेवें और अमली सेवा का सबूत देवें।

3. ट्रस्ट (न्यास) के मैम्बरान के नाम मन्दर्जाज़ैल (नीचे) दर्ज़ हैं :-

    1. अमोलक राम
    2. बनारसीदास
    3. डा. भगतराम, देहली
    4. दीनानाथ महंगी, जम्मू कश्मीर
    5. हकीम नत्थूराम, जगाधरी

6. फ़कीर चन्द, अम्बाला निवासी

7. ओम कपूर, देहरादून

इन प्रेमियों में से अमोलक राम व बनारसी दास ताज़िन्दगी (आजीवन) ट्रस्ट के मैम्बर समझने चाहिएं। बाकी प्रेमी भी तमाम ज़िन्दगी अगर इस सेवा में अर्पण करने का निश्चय कर लेवें और सही सेवा का सबूत देवें तो मुस्तकिल (स्थाई) मैम्बर ही होंगे, नहीं तो हालात के मुताबिक अगर कोई तबदीली करनी हुई तो कर दी जावेगी। तमाम ट्रस्टी मैम्बरान में से अगर कोई समता के असूलों के पाबन्द न रहेगा, तो उसकी तबदीली कर दी जावेगी। अब तमाम ट्रस्टी मैम्बरान अपनी ज़िम्मेदारी को अनुभव कर के इस सेवा के महाकारज को सर अन्जाम देवें (पूरा करें) और तमाम संगत इन प्रेमियों के साथ पूरा-पूरा सहयोग देवें। यह ही सत्गुरु आज्ञा सबके वास्ते है। ईश्वर आज्ञाकारी भावना देवे।

मंगतराम
हाल जगाधरी
दिनांक 25-9-1953

17.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत संगत समतावाद के प्रबन्धक मण्डल के नियम दिनांक (25-9-1953)

1. ज़िला के तमाम सत्संगों से 2 या 3 मैम्बर प्रबन्धक मण्डल में शामिल होने चाहिएं।

2. आश्रम ट्रस्ट के मैम्बरों की तबदीली श्री सत्गुरु महाराज जी की अदम मौजूदगी में प्रबन्धक मण्डल के ज़िम्मे ही होगी।

3. मण्डल में से समता की तालीम को जागृत करने की ख़ातिर सेवादारी भिक्षु मुकर्रर करने चाहिएं।

4. तमाम प्रकार की परमार्थिक उन्नति के मुत्तल्लिक प्रोग्राम सोचना मण्डल का ही काम होगा।

5. मण्डल की कायमी जिस वक़्त संगत चाहे कायम कर लेवे, मगर बेहतर होगा कि इस साल मुकामी मण्डल कायम कर लेवें, अगले साल सम्मेलन पर 'सैन्ट्रल मण्डल' कायम कर लेवें।

6. मण्डल के मैम्बर ऐसे होने चाहिएं जो समता के असूलों पर पूर्ण निश्चय से कारबन्द होवें।

मंगतराम
हाल जगाधरी
दिनांक 25-9-1953

18.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रबन्ध कार्यों के कार्यकर्ता प्रेमियों के लिए नियम एवं संगत को रजिस्टर्ड कराने का आदेश (दिनांक 25-9-1953)

प्रबन्ध कार्यों में कार्यकर्ता प्रेमियों के इस तरीका से स्थान कायम करने चाहिएं।

1. अतिमुख सेवादार (सर्वसमर्पण भाव रखने वाला)
2. मुख सेवादार (समर्पण भाव रखने वाला)
3. भावुक सेवादार (भावना सहित सेवा करने वाला)
4. सेवादार (निमित्त मात्र समय के मुताबिक सेवा करने वाला)
5. चूंकि परमार्थ के मार्ग में सेवादारों का ही प्रबन्धक होना कल्याणकारी होता है इस वास्ते ऊपर के नामों के मुताबिक 'प्रधान' या 'सेक्रेटरी' के नाम होने चाहिए।
6. अक्सर परमार्थ में प्रधानता की ख़ातिर बड़ी-बड़ी धड़े बन्दियां हो जाया करती हैं। इस वास्ते प्रधान लफ़्ज़ (शब्द) का त्याग करके सेवादारों का लफ़्ज़ (शब्द) निश्चित कर लेना चाहिए।
7. 'अतिमुख सेवादार' भाव वाला प्रेमी न मिले तो 'मुख सेवादार' के भाव वाले को ही मुखी कायम कर लेना चाहिए। अगर 'मुखी

सेवादार की भावना रखने वाला भी न मिले तो 'भावुक सेवादार' को ही मुखी कायम कर लेना चाहिए। अपने प्रबन्ध कार्यों को इस रीति से पूरा करने का यत्न करना चाहिए।

8. जिस-जिस जगह ख़ास मजबूरी से कमेटी बनानी होवे, तो ऐसे ही सेवादारों का लक्षण विचार करके मुखी कायम कर लेना चाहिए।

9. अगर बग़ैर रजिस्टर्ड संगत के काम चल सके तो चलाना चाहिए नहीं तो हस्ब ज़रूरत (आवश्यकतानुसार), संगत को रजिस्टर्ड करवा लें।

10. सत्यवादी, त्यागी, परोपकारी तथा मुकम्मल (पूर्ण) पांच असूलों के सहित सेवादारों का सरूप तमाम संगत और तमाम संसार के वास्ते जीवन रूप है, ऐसा निश्चय होना चाहिए।

मंगतराम
हाल जगाधरी
दिनांक 25-9-1953

19.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत समता योग आश्रम के समता सत्संग सम्मेलन की तिथि निश्चित करने सम्बन्धी आदेश (दिनांक 11-2-1952)

सालाना सम्मेलन (जगाधरी) की तारीख मुकर्ररी के मुत्तलिक हिदायत (आदेश)

सम्मेलन की तारीख वैसे शुरू कार्तिक का पहला इतवार ही मुकर्रर समझना चाहिए। अगर किसी वक़्त पहले इतवार के साथ दिवाली आ जावे तो दूसरा इतवार उस वक़्त मुकर्रर कर लेना चाहिए। हर हालत में सम्मेलन की तारीख के साथ दिवाली नहीं होनी चाहिए। इससे सम्मेलन में हाज़िर होने के वास्ते प्रेमियों को रुकावट पड़ती है। सब प्रेमियों को इन वजुहात (कारण) तारीख मुकर्ररी का पता होना चाहिए। ईश्वर सुमति देवे।

मंगतराम
हल्द्वानी
दिनांक 11-2-1952

20.
श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत सम्मेलन लंगर सम्बन्धी आदेश (दिनांक 15-2-1952)

1. जगाधरी सालाना सत्संग सम्मेलन के मुत्तलिक हिदायात (आदेश)

2. आइन्दा के लिए सालाना सत्संग सम्मेलन में आम भण्डारा बन्द होना चाहिए। सिर्फ़ सत्संग का प्रशाद ही तकसीम करके आम संगत की सेवा कर देनी चाहिए।

3. प्रशाद तकसीम के बाद जब आम पब्लिक चली जावे, तो फिर आश्रम में स्थित सज्जन और जगाधरी निवासी प्रेमी व श्रद्धालु अधिकारी सेवादार भोजन पायें।

4. अगर किसी वक़्त कड़ाह प्रशाद ख़त्म हो जाए और आम लोग बकाया रहते हों जिनको प्रशाद न मिला होवे, तो उनको एक-एक फुलका और थोड़ी दाल बतौर प्रशाद तकसीम कर देवें।

5. आम पब्लिक को बैठाकर भोजन करवाने से अक्सर बद-इन्तज़ामी हो जाती है और इससे बजाए श्रद्धा के अश्रद्धापन पैदा हो जाता है।

6. शहर की नज़दीकी के कारण आम पब्लिक की आमद का कुछ पूरा पता नहीं लग सकता है। इस वास्ते आम भण्डारे का इन्तज़ाम सही (रूप) में सरअन्ज़ाम नहीं हो सकता है।

7. सिर्फ़ सत्संग प्रशाद ही आम पब्लिक के वास्ते मर्यादापूर्वक सही प्रोग्राम में चल सकता है।

8. तकरीबन 2 बजे तक प्रशाद तकसीम का कार्य बिल्कुल ख़त्म हो जाना चाहिए। बाद में ख़ास हालात मजबूर करे तो प्रशाद देना चाहिए।

9. सम्मेलन में हाज़िर होने वाले ख़ास प्रेमी सज्जन सम्मेलन हाज़िरी का मुद्दा केवल आध्यात्मिक उन्नति को मद्देनज़र (ध्यान में) रखते हुए बरमौका सम्मेलन (सम्मेलन के अवसर पर) हाज़िर होकर के अपनी सही आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करें, ऐसा निश्चय सबको होना चाहिए।

10. लंगर बिल्कुल साधारण रूप में होना चाहिए जो आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होवे।

11. लंगर में किसी किस्म का भेद-भाव न होने की ख़ास एहतियात (सावधानी) रखनी चाहिए।

12. आइन्दा जो भी त्रुटि सम्मेलन में मालूम हुई तो फिर उसके मुताबिक नियम कायम हो जावेगा। सब प्रेमियों को इन असूलों का बोध होना चाहिए।

मंगतराम
अज़ हल्द्वानी
दिनांक 16-2-1952

21.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत समता सत्संग विधि सम्बन्धी आदेश

सत्संग आरम्भ

1. महामन्त्र का उच्चारण – 5 बार सब मिलकर (कोरस की तरह से)
2. मंगलाचरण का उच्चारण – सब मिलकर (कोरस की तरह से)
3. श्री गुरुवाणी का पाठ व ग्रन्थ श्री समता विलास से विचार व दीगर सत्पुरुषों के चरित्र व वाणी पर विचार
4. आरती – सब मिलकर
5. समता मंगल – सब मिलकर
6. प्रशाद वितरण

22.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत समता सत्संग नीति सम्बन्धी आदेश

1. सत्संग में उन ही असूलों पर विचार होना चाहिए जो ग्रन्थ श्री समता विलास में सत्संग निर्णय (नामक) प्रसंग में आ चुके हैं।

2. सत्संग में किसी किस्म का बाद-मुबाद नहीं होना चाहिए।

3. सत्संग के बाद में खुला विचार होना चाहिए। ख़ास अगर कोई शब्द उच्चारण करना चाहे तो सिर्फ प्रसिद्ध सन्तों की वाणी के शब्द उच्चारण कर सकता है, नहीं तो सत्संग में सुने प्रसंगों पर ग़ौर (विचार) करना काफ़ी है। इन असूलों के अलावा भांति-भांति की कविता उच्चारण करने की इजाज़त नहीं बल्कि ख़ास पाबन्दी है। अच्छी तरह से सब प्रेमी ग़ौर कर लेवें और इन असूलों पर पूर्ण कारबन्द होवें।

4. इस वास्ते अच्छी तरह से सत्संग की नीति को समझें और किसी किस्म की बेअसूली कोई कार्यवाही न करें। सब प्रेमियों को पूरी-पूरी दृढ़ता इन विचारों की होनी चाहिए।

5. सत्संग में आपस में प्रणाम या 'ब्रह्म सत्यम्' कह कर बैठ जाया करें। पुस्तक (ग्रन्थ) को बिल्कुल माथा टेकना मना है।

6. और सिर्फ़ पुस्तकों (ग्रन्थों) की थोड़ी ऊँची जगह रखकर पाठक साधारण जगह ही बैठकर विचार कर लें और किसी किस्म की नुमाइश या गद्दी लगाने की ज़रूरत नहीं है। इससे

कमज़ोर बुद्धि वालों के अन्दर अक्सर अभिमान आ जाया करता है। इस वास्ते निर्मान – भाव से ही पाठक बैठकर के पाठ या विचार किया करें। यह सबको वाजेह (पता) कर देवें।

7. अगर आसन लगाना होवे तो सिर्फ़ पाठक के वास्ते कुशा या ऊन का आसन लगाना चाहिए।

8. हर एक काम में सादगी और सरलता होनी अधिक ज़रूरी है। नुमाइश से परहेज़ करना चाहिए। इससे अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त नहीं होती है, बल्कि ईर्ष्या और अभिमान होने का ख़तरा हो जाता है।

9. ऊंच नीच का भाव सत्संग में नहीं होना चाहिए बल्कि हर एक प्रेमी छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सेवा का कार्य अन्जाम देते हुए अपने आप को एक अदना सेवक ही जानकर सेवा करे तो ही समता के अनुयाई होने का वह अधिकारी हो सकता है। तब ही धर्म की सही जागृति अपने आप में और दूसरों में हो सकती है। इस वास्ते आइन्दा आज्ञानुकूल ही सब कार्य किया करें। ईश्वर सुमति देवें।

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत सत्संग निर्णय

(ग्रन्थ श्री समता विलास से)

वचन–1. ईश्वर भगति का निर्मल विचार – यानी सरूप का पूर्ण निर्णय समझना और पूर्ण श्रद्धायुक्त अपने आपको बनाना।

वचन–2. सादगी पर विचार यानी ख़ुराक, लिबास को सादा करना, फज़ूल ख़र्ची को छोड़ना।

वचन–3. सत–सेवा का विचार यानी मानुष सेवा में अधिक प्रण रखना और दूसरे जीवों की रक्षा करनी लाज़मी समझना।

वचन–4. सत्पुरुषों के सत्–नियमों पर विचार यानी सत्पुरुषों के पवित्र आदर्श को अपनाने का यत्न करना।

वचन–5. सत्कर्म पर विचार यानी धर्म अनुकूल और प्रतिकूल कर्मों को समझ कर अनुकूल कर्म की धारणा करनी।

वचन–6. सत्–धर्म के सत् प्रचार पर विचार यानी अपने पवित्र आचरण की दृढ़ता द्वारा दूसरे जीवों की कल्याण करनी।

वचन–7. निर्पख भावना का विचार यानी बाअसूल जीवन बनाना। बादमुबाद और कथनी–ज्ञान से बिल्कुल परहेज़ रखना।

वचन–8. सब मज़हबों के रहनुमाओं के असली असूलों पर विचार यानी तमाम सत्पुरुषों के जीवन आदर्श को विचार करके मज़हबी तास्सुब और बादमुबाद का त्याग करना।

वचन–9. अपनी जीवन अवस्था के मुताबिक समय और सत्–पुरुषार्थ का विचार यानी पूर्ण समय की पाबन्दी से अपनी मानसिक पवित्रता हासिल करने का पूरा यत्न करना।

वचन–10. अपने खानदान और जाति में बुरी रस्मों को छोड़ने का विचार यानी निरर्थक (व्यर्थ) जो रिवाज़ जाति व खानदान में जारी हों, उनसे अपने आपको पवित्र करना।

वचन–11. कुल जाति के प्रचलित गुरुओं के आचरण पर विचार– यानी बुरे आचार वाले गुरु को त्यागना और निर्मल आचरण वाले सत्पुरुष की संगत से अपने आपको पवित्र करना।

वचन–12. अपने मन में पवित्र मनोरथ को धारण करने का विचार यानी सच्चे धर्म में अधिक से अधिक अपने तन, मन, धन से सेवा करनी।

वचन–13. सत्संग में प्रेम बढ़ाने पर विचार यानी सत्संग को अधिक कल्याणकारी समझना और एकत्र होकर अपने जीवन की निर्मल उन्नति करनी।

वचन–14. एकता व संगठन पर विचार यानी सब जीवों में एकता भाव रखने की दृढ़ता और संगठित होकर सरब जीवों की उन्नति का विचार करना।

23.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत संगत कार्यकर्ता प्रेमीजनों के लिए सत् शिक्षा (सन् 1948 सिद्खड्ड मंसूरी से)

1. चूंकि दुनिया शक का समुन्दर है, इस वास्ते हर एक पहलू में सच्चाई और सफाई का नियम गुरुमुखों को दृढ़ रखना चाहिए।
2. तमाम अखराजात (ख़र्च) छपवाई का पूर्ण हिसाब रखें। एक ख़र्च की तहरीर सेवादारों को भेजें और एक बनारसीदास को रवाना करनी बवास्ते पड़ताल के।
3. जो रुपया बैंक में भवानीदास और सत्संगशाला का तुम्हारे नाम है छ:माह तक अगर उसका सही इस्तेमाल बवास्ते आश्रम न कर सकें, तो माह चैत में आज्ञा लेकर तमाम रूपया निकलवाकर पेश कर देवें। उस वक़्त उसको कहीं न कहीं ख़र्च कर दिया जावेगा। ऐसे गुरु चरणों की भेंट का रूपया किसी प्रेमी के नाम नहीं रहना चाहिए। दुनिया का चक्र तबदीली में है, यह विचार कर लेवें। मलिक भवानीदास को भी वाज़या कर देना।
4. यह दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि कोई धन की सेवा करता है, कोई तन व मन की, मगर सब के अन्दर निष्काम भाव होना चाहिए तब ही मानसिक दोषों की निवृत्ति और सत्धर्म का प्रकाश होता है। यह ही मार्ग जीवन कल्याण का है। ईश्वर सत् कर्तव्य में निष्काम भाव की दृढ्ता बख़्शें।

अज़ मसूरी सिद्धखड्ड से
वर्षा ऋतु सन् 1948

24.
श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत शिक्षा सब प्रेमियों के लिए

1. किसी भी मज़हब के बुज़ुर्ग (महापुरुष) की तौहीन (अनादर) नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनके श्रेष्ठ गुण धारण करने चाहिएं।

2. जो भी सत्संग में आए उसकी श्रद्धा बढ़ानी चाहिए। किसी किस्म का उसका अपमान नहीं करना चाहिए।

3. जितना भी कोई अधिक सेवादार बने, उतना ही उसको निर्मान होना चाहिए।

4. जितना भी कोई पाप-वृत्ति वाला क्यों न होवे, उसके साथ पवित्र भाव और आदर से पेश आना चाहिए। किसी किस्म का मलीन भाव रखना, अपनी पवित्रता को नाश करने वाला है। ऐसा निश्चय होना चाहिए।

5. समता अनुयाई अपने आप को सही सेवक बनाने का यत्न करें। इससे ही अपना जीवन उन्नत होता है और धर्म की भी जागृति होती है।

6. संगत में कोई बड़ा बनने का यत्न न करे, बल्कि अधिक से अधिक सेवादार बनने की कोशिश करे। इससे ही प्रेम बढ़ता है।

7. किसी किस्म की हंसी और मसखरी संगत में करनी एक निहायत जहालत की निशानी है। इसलिए इस अवगुण से पवित्र

रहने का यत्न करें।

8. आपस में अधिक प्रेम और एक दूसरे का अधिक आदर करना चाहिए। इससे समता-भाव प्रकाशता है और दूसरे सज्जन भी निर्मल आदर्श देख कर श्रद्धा युक्त होते हैं।

9. अधिक पवित्र जीवन बनायें। बातों से कल्याण नहीं हो सकता है, बल्कि बाद मुबाद (वाद-विवाद) बढ़ता है। अच्छी तरह इन नियमों का पालन करके अपने आपको बाहोश रखें। आइन्दा कोई नुक्स कभी किसी प्रेमी में देखने में न आये। ईश्वर सत्बुद्धि और गुरुवचन में विश्वास देवे।

25.
समतावादी प्रेमियों के लिए श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आदेश

1. समतावादी सज्जन ईश्वर के सत् नियमों का पालन करना अधिक ज़रूरी फ़र्ज़ जानकर हर एक मज़हब के साथ निर्वैर होकर बर्ताव करना ही अपना मुख (मुख्य) धर्म जानें और अपने आपको ईश्वर आज्ञा में निश्चित करके समभाव में स्थित होना ही परम साधन समझें।

2. जिस-जिस मज़हब या पंथ में जो समतावादी सज्जन होवे, उसको अपना जीवन निर्विकार बनाना और दूसरों की कल्याण चाहनी अपना मुख्य उद्देश्य जाने।

3. भिन्न - भिन्न मज़हबी व मुल्की (देशीय) रस्मों-रिवाज के तंग दायरों से अपने आपको आज़ाद करके उनके बाद-मुबाद से मुखलिसी (छुटकारा) हासिल करे और निष्काम भाव से सत्कर्मों से अपने आपको दृढ़ करें।

4. समभाव ही कल्याण है, समभाव ही जीव का वास्तविक स्वरूप और परम धाम है, समभाव ही धर्म है, समभाव की प्राप्ति में जतन (यत्न) करना ही गुरमुख मार्ग है। इस वास्ते अपने आपको मज़हबी ख़ुदगर्ज़ी (पंथीय स्वार्थपरता) से आज़ाद करके सत् असूलों में पाबन्द (कायम) होने का सत् साधन करें और हर घड़ी, हर लम्हा (हर पल) अपने आप पर काबू (नियन्त्रण) पाने की कोशिश (यत्न) करें। इसमें ही असली शान्ति है।

26.
श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत शिष्यों की कड़ी परीक्षा सम्बन्धी चेतावनी (अक्तूबर सन् 1952 सम्मेलन, जगाधरी)

आने वाले सालों में अगर शरीर रहा तो शिष्यों की कड़ी परीक्षा होगी। 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) ऐसे ही मीठी-मीठी बातें नहीं करते। बड़े कड़े और सख़्त है। इनके पंजे में फंसा हुआ छूट नहीं सकता। कितने समय के पाबन्द आप लोगों के लिए 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) हैं। सुबह से कीली की तरह एक आसन पर गड़ कर बैठे रहते हैं। किसी भी प्रेमी को आज तक जो कुछ भी उसने 'इनसे' (श्री सत्गुरुदेव महाराज से) पूछा हमेशा ठीक जवाब इन्होंने (श्री सत्गुरुदेव महाराज ने) दिया।

'ये' हर बशर (इन्सान)को अपने से उच्च समझते हैं यानि उच्च-भाव करके उसका ख़्याल करते हैं। आप लोगों का भला करने के लिए 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) अपने बाल भी नुचवाने के लिए तैयार हैं। किसी से आज तक नाराज़ नहीं हुए, फिर भी फ़ायदा न उठाओ तो किसी की ग़लती। जब तक 'इनका' (श्री सत्गुरुदेव महाराज का) इस नश्वर शरीर में वास है, तब तक कुछ परवाह नहीं है। 'इनके' (श्री सत्गुरुदेव महाराज के) शरीर छोड़ने के बाद जब तुम 'इनकी' (श्री सत्गुरुदेव महाराज की) वाणी और विचार देखोगे तो रोओगे और पछताओगे कि हमने क्या किया। 'इनकी' (श्री सत्गुरुदेव महाराज की) तो बस यही सेवा है कि तुम अपना जीवन निर्मल बनाओ और कुछ सतनाम की कमाई कर लो, अपनी तपिश

बुझा लो और अपने आपके ठंडा कर लो। 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) तो तुम सबको जीव स्वरूप समझते हैं और सहज भाव यह चाहते हैं कि आप लोग इस तपिश (जलन) से छुटकारा पा जाओ, अपनी गाढ़ी कमाई कोई नालियों में थोड़े ही डालता है, कुछ बनो तो सही, श्रद्धावान ही बनो। इस समय तमाम प्राणी संशय और शकूकों को प्राप्त हो रहे हैं। तब ही उनका यह हाल है और वे कभी भी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकेंगे। होश करो और कुछ अपने आप को सम्भालो।

27.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत आइन्दा के लिए आम प्रचार का प्रोग्राम बन्द करने सम्बन्धी चेतावनी (हल्द्वानी, दिनांक 9-3-1953)

समता की तालीम में कौन सा विचार कलमबन्द (लिपिबद्ध) नहीं हुआ है- शौक से मुतालया (अध्ययन) करें तब पूर्ण समझ आये।

अब खास विचार यह है कि जितना भी समता (समता सिद्धान्त) की तालीम को खुले विचार की सूरत में हर एक के सामने रखा गया है उसी हालात के मुताबिक निकम्मे (बेकार) लोग ही इस तालीम में दाखिल हो रहे हैं जो कि महज़ बातूनी और इस तालीम को बिगाड़ने वाले हैं। इन वजूहातों (कारणों) के मुताबिक आइन्दा खुले प्रचार का प्रोग्राम बन्द ही करना पड़ेगा जैसा कि एक साल से विचार हो रहा है। तमाम समय तपस्या में ही गुज़रेगा और कोई खास (विशेष) जिज्ञासु होवे तो समय दे दिया जायेगा, अगर वह अपनी आत्मिक उन्नति के मुत्तलिक (सम्बन्ध में) समय लेवे। अब समता की तालीम को असली जीवन में अपनाने वाले प्रेमियों की ज़रूरत (आवश्यकता) है जो कि आइन्दा देश के वास्ते सफलता की सूरत बन सकें।

28.
सदाचारी जीवन बनाने हेतु श्री सत्गुरुदेव महाराज जी का आदेश (दिनांक 22-12-1952, दिल्ली)

प्रेमियों,

यह दुनिया अन्दरों बाहरों (अन्तर बाहिर) हर वक़्त हर जीव की हरकत देख रही है। ऐसा वेले (इस समय) जो विश्वास वाले हैं वे अपनी सत् की सत्ता पर दृढ़ता से कायम रहते हैं और वे बाहरी दुनिया (बहिरजगत) की परवाह न करके अपनी अन्दरूनी सत्ता (अर्न्तआत्मा) से गाफ़िल नहीं होते और न ही कोई ऐसी ग़लती करते हैं जिससे अन्दरूनी सत्ता में फ़र्क आवे।

जैसा जिसके अन्दर विश्वास होता है वैसे ही सृष्टि को रचता है। जैसे जिनके अन्दर असत्य खड़ा है वैसी ही सृष्टि वोह रच लेता है। इसलिए हमारे अन्दर की सृष्टि हमारे विश्वास के अनुकूल रची गई है और हमारे विचार इसी तरह सत् और असत् को अपनाए हुए हैं।

गो (चाहे) तुम प्रेमियों (सज्जनों) के दिलों में यह विचार शायद न बैठें, क्योंकि तुमने किसी और विचार में अपने रूप को ढ़ाल लिया है। अपने आप को हमेशा सत्ग्रही और सत्-विश्वासी बनाओ क्योंकि इस जीवन का पता नहीं। इस ज़माने का कोई पता नहीं, बाहर (बाहिरजगत) जो चीजें बनीं हैं, हो सकता है कि अचानक तुम्हारे नाश का कारण बन जावें। अब तुम एक ज़िन्दगी (जीवन तत्व) के नज़दीक आए हो इसलिए इस ज़िन्दगी का मुतालालय (अध्ययन)

करो और बाहोश होकर सत् विचारों को अपनाओ। 'इन्होंने' (श्री सत्गुरुदेव महाराज ने) असली ख़ुशी प्राप्त की है। तुम्हारा अन्त:करण इसको समझे या न समझे 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) तो चाहते हैं कि चूंकि तुम 'इनके' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) नज़दीक आए हो इसलिए थोड़ा बहुत विचार निश्चय करके अपना लो। अगर यह यकीन (विश्वास) दिन-रात दृढ़ हो जाए तो शान्ति तुम्हारे अंग अंग में समा जाएगी, नहीं तो यह समझ लो कि सागर के पास आकर ऐसे ही चले गए।

ऐसे ज़माने विखे (इस काल के बीच में) जब कि नास्तिकवाद फैला हुआ है, हर एक की वृत्ति बाहर की तरफ़ दौड़ रही है, जो अशान्ति का कारण है। इसलिए कुछ न कुछ अपने आप को सही अनुयाई बनाओ, जिस करके अपने मकसद (ध्येय) में कामयाब (सफल) हो जाओ। जिस तरह देहली सेन्ट्रल जगह (केन्द्रीय स्थान) है। इस जगह अदारे ही अदारे (संस्थाएं ही संस्थाएं) हैं। तुम्हारा जीवन सही होगा तो बाकी अदारे धरे धराये रह जाएंगे। दुनिया आकर तुम्हारे जीवन को देखेगी और सुख शान्ति का एहसास करेगी। दुनिया (जनता) ख़ुद-ब-ख़ुद तुम्हारे पास खिंची (आकर्षित) चली आवेगी। इसलिए तुम अगर अपनी खुशनसीबी (सौभाग्य) समझो तो ऐसा होना चाहिए। 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) ऐसा ही चाहते हैं ताकि तुम्हारा जीवन देखकर, तुम्हारे तप-त्याग को देखकर, तुम्हारी कुर्बानी (बलिदान) देखकर, लोग कुर्बानी (बलिदान) पर आमादा (तत्पर) हो जावें। कुर्बानी को देखकर कुर्बानी होती है। तुम्हारा सदाचारी जीवन होगा तो दूसरे भी सदाचारी होंगे। फिर तुम थोड़ी सी भी कुर्बानी कर गए तो दूसरे फिर तुमसे ज़्यादा कुर्बानी करके

दिखाएंगे। श्रद्धा बड़ी अनमोल वस्तु है। 'इनके' (श्री सत्गुरुदेव महाराज के) जीवन को देखकर तुमने श्रद्धा की है, दूसरे (अन्य लोग) तुम्हारा जीवन देखकर तुम पर श्रद्धा करेंगे। फिर देखना यह संगत कहां से कहां जाएगी, तुम मानो या न मानो।

29.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत सत्असूलों से पतित हो जाने पर गुरु दरबार से जी चुराने वाले प्रेमी के लिए चेतावनी (अगस्त, सन् 1953 केलाघाट, पोस्ट-राजपुर)

श्री सत्गुरुदेव महाराज ने एक प्रेमी को सदाचारी असूलों से पतित हो जाने पर, गुरु दरबार से जी चुराने पर पत्र द्वारा चेतावनी दी:-

एकान्तवास, केलाघाट - राजपुर, अगस्त, 1953

अच्छी तरह इन विचारों पर गौर (ध्यान) करें:-

1. आकबत (परलोक/अन्त समय) को भूल कर किस जादूगरी में जा रहे हो।

2. नाशवान शरीर के मोहवश होकर के ज़िन्दगी की तहक़ीक़ात (खोज़) में क्यों कायर बन रहे हो।

3. सच्चे मित्र और सच्चे मुहाफ़िज़ (रक्षक गुरु) के वचनों का उल्लंघन करके किस कुसंग में अपनी रूहानी (आत्मिक) नाश को खरीद कर रहे हो।

4. किसी गलत निश्चय को दिल में दृढ़ कर लिया है कि साथ में अपनी इच्छाओं को मित्र और प्रभु आशा पर निश्चय। यह दोनों हालतें नामुमकिन (असम्भव) हैं। जब प्रभु आज्ञा पर निश्चय आया तो अपनी तमाम कामनाएं ख़त्म हुई। जब तक अपने

अन्दर कामनाएं मौजूद हैं तो प्रभु आज्ञा का निश्चय महज़ (सिर्फ़) नास्तिकपन और दम्भ हैं। इस जहालत (मूर्खता) से जागृत होने की कोशिश करो। अपनी ग़लतियों के ज़ेर-असर (दबाव में आकर) होकर के गुरु दरबार से जी मत चुरावें। आखिर सब की कल्याण गुरु कृपा और सत् श्रद्धा से ही हुई है और होगी। अपने आप में बाहोश होकर सही कल्याण के रास्ते पर चलने की कोशिश करें क्योंकि शरीर-यात्रा नाश की तरफ़ दौड़ रही है।

एक ख़ास प्रेमी होने के कारण यह थोड़ी सी चेतावनी तुमको दी गई है कि शायद तुम्हारे देव-संस्कार जागृत होकर के तुम्हारे सही (रक्षक) बन सकें और गुरु वाक्य को अपनाते हुए सही ज़िन्दगी को हासिल कर सकें। ईश्वर सत्बुद्धि देवें।

30.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत किसी भी प्रेमी द्वारा नाम-दान देने की मनाही एवं चेतावनी

श्रीनगर

12-7-52

आज्ञाकारी संगत अबोहर,

आशीर्वाद पहुँचे। सब प्रेमियों को वाज़े (सूचित) होवे कि एक मामला प्रेमी बंशीलाल और प्रेमी किशोरी लाल की धर्मपत्नियों का दरपेश (समक्ष) है। जिसके मुतल्लिक चेतावनी दी जाती है कि प्रेमी बंशीलाल की धर्मपत्नी ने कुछ अरसे से समता की तालीम (समता-सिद्धान्त) का आसरा लेकर गुरु बनकर कई स्त्रियों को उपदेश दिया है और यह मामला उपदेश वाला प्रेमी किशोरी लाल के घर रायज (आरम्भ) हुआ है। उसकी धर्म-पत्नी की इमां (उकसाहट) पर, बाकी आपस की नाराज़गी होने से यह ख़बर प्रेमी किशोरी लाल ने गुरु दरबार में दी, जैसे कि हालात मालूम हुए हैं।

इनके मुताबिक इस दूषित कर्म के आरम्भ करने का जो सिलसिला इन देवियों ने रचा है, इसके वास्ते गुरु दरबार से यही आज्ञा है कि आइन्दा इन देवियों को किसी वक्त भी गुरु-दर्शन की आज्ञा नहीं दी जावेगी और न ही जगाधरी सम्मेलन पर इनको हाज़िर होने की आज्ञा दी जाती है। तमाम संगत के वास्ते एक कलंकित कर्म किया है और गुरु दरबार में जो प्रतिज्ञा की थी उसको भंग किया है

और न ही इन देवियों को गुरु–उपदेश की कुछ सफलता प्राप्त होगी। ख़्वाहे लाख यतन क्यों न करें। अगर ऐसे हालात होने पर भी गुरुडम को बंशीलाल की धर्मपत्नी त्याग न करे तो तमाम प्रेमी इसकी पूरी–पूरी मुख़ालफ़त (विरोध) करें और तमाम समता की तालीम (समता–सिद्धान्त) की पुस्तकें इनसे ले लेवें और दूसरे (अन्य) लोगों को वाज़े (सूचित) करें कि इनको इस अनुचित कर्म के करने से गुरु दरबार से ख़ारिज (निष्कासित) कर दिया गया है। कोई इनकी बनावट पर न भूलें और न ही खराब होवें। प्रेमी किशोरीलाल और बंशीलाल को चूंकि इस मामले का पता नहीं है, इस वास्ते वह इस दोष की लपेट में नहीं आ सकते हैं और प्रेमी दयाल चंद ने बंशीलाल की धर्मपत्नी की सफाई की चिट्ठी लिखी है। हालांकि उसकी औरत ने खुद उपदेश उस से लिया है, सो ऐसा गुरु दरबार में झूठ बोलना, – इसके वास्ते वह खुद ही ऐसी सज़ा को प्राप्त होगा जो कि गुरु दरबार में झूठ बोलने से मिलती है। आइन्दा (आगे के लिए) सब प्रेमियों को चेतावनी दी जाती है कि कोई भी समता की तालीम (समता–सिद्धान्त) के विरूद्ध कार्यवाही सुनें तो उसकी पेशबन्दी (रोकथाम) करें।

आगे ही इस गुरुडम ने भारतवर्ष का नाश किया है और समता की तालीम (समता –सिद्धान्त) इसी दुरुस्ती (सुधार) के वास्ते प्रगट हुई है। इस वास्ते तमाम प्रेमी समता की तालीम (समता सिद्धान्त) को अपनाने वाले और रख़्यक (रक्षक) बनें। ऐसी एहतियात (सावधानी) में रहना चाहिए। आइन्दा इन देवियों के मुतल्लिक (बारे में) कोई पत्रिका इधर लिखने की कोई जुर्रत (हिम्मत) न करें और न ही इधर से कोई जवाब दे सकते हैं।

ऐसे महा–अपराध कर्म के करने वाल को कई जन्म सज़ा

भुगतनी पड़ती है और जिन देवियों ने उपदेश लिया है वह ऐसा ही समझें जैसे कि कागज़ पर रोटी का लफ़्ज (शब्द) लिखा हुआ पढ़ लेने से भूख की निवृत्ति नहीं होती। सब यत्न नेहफल (निष्फल) ही जानें।

ये पत्रिका प्रेमी किशोरी लाल और प्रेमी बंशीलाल को बुलाकर सुना देवें।

ऐसा निश्चय तो नहीं था कि इन प्रेमियों के घर से ही समता की तालीम (समता-सिद्धान्त) के विरूद्ध कार्यवाही होगी। ईश्वर आइन्दा (आगे के लिए) कृपा करें और सबको सुमति देवें जिस करके निर्मल सेवक रूप में निश्चित होकर अपनी जीवन-यात्रा को पवित्र कर सकें।

ये थोड़ा लिखना ज़्यादा समझें। ऐसा अनर्थ कारज (कार्य) कहीं भी सुनने में नहीं आया है कि गुरु की मौजूदगी में शिष्य रूप में कोई गुरु बने। ये इन देवियों ने एक खिलौना समझकर ऐसी रचना शुरू की है।

प्रेमी किशोरीलाल और बंशीलाल की ज़्यादा जिम्मेदारी है कि इनके ज़रिए ही इनकी धर्मपत्नियों को इनकी बड़ी प्रार्थना पर उपदेश मिला था, जिसका नतीजा ये निकला।

ईश्वर आइन्दा सबको गुरुवचन पालने की श्रेष्ठ बुद्धि देवें। दोबारा सबको आशीर्वाद पहुंचे।

हस्ताक्षर
मंगतराम
अज़ श्रीनगर

31.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत किसी भी प्रेमी को अधूरी हालत में रहबरी (मार्गदर्शन) की मनाही

आज्ञाकारी सती-सेवक परसराम जी,

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत्-श्रद्धा देवें। प्रेमी राम लाल को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी, जो कुछ प्रभु-इच्छा से होता है वह सत् है, मगर यह याद रखना चाहिए कि मार्फ़त (रूहानियत की मंज़िल) का मुकाम बहुत दूर है यानि तमाम ख़्वाहिशों से मुबर्रा (स्वतन्त्र) होकर उस ज़िन्दगी के जलाल (प्रकाश) को देखना है और तुमने एक अधूरी हालत में रहबरी करके (रास्ता दिखाकर, गाइड बनकर) अपने रास्ते में रुकावट डाल ली है। ख़ैर, इसका नतीजा कुछ पता लग जावेगा। यह तो मंज़िल ऐसी है कि पूर्ण प्राप्ति वाले भी जल्दी-जल्दी रहनुमाई (मार्गदर्शन)नहीं करते। यह एक बड़ी ज़िम्मेवारी है। ख़ैर उस प्रेमी को कुछ हासिल हो या न हो मगर तुमको अपनी रुकावट के भंवर में जरूरी फिरना पड़ेगा। तुमको पहले ही यह समझाया गया था। ईश्वर आइन्दा के वास्ते सत्-मत (सत्-बुद्धि) देवें।

प्रेमी जी, केवल रास्ते के सुन लेने से कुछ हासिल नहीं होता, जब तक कि कामिल उस्ताद का आशीर्वाद हर लम्हा (हर-पल) साथ न हो। ऐसा अगर हो सके तो कोई भी लाल की लाली से खाली न रहे। यह तो शिष्य का सत् यत्न और गुरु का आशीर्वाद साथ होता है

तब वासना के समुन्दर से पार होकर निज-आनन्द को प्राप्त हो सकता है। बड़ी श्रद्धा तुम्हारी जो एक साल तक पत्र लिखने का मौका मिला। बचपन वाले ख़्याल छोड़कर सही श्रद्धावान होकर अपनी जीवन उन्नति करें। जो कुछ कर बैठे हो इस पर पछताओ और आइन्दा के वास्ते पोशीदा रहो (गुप्त रहो)। हर एक सत्संग में जा सकते हो मगर किसी की चापलूसी पर भूल नहीं जाना। कई गुरु मुरदार फ़रोख़्त कर रहे हैं (मुर्दा बेच रहे हैं)। ज़िन्दगी फ़रोख़्त करने वाला (सच्चा फ़कीर) कोई विरला ही होगा।

प्रेमी रामलाल को वाज़े (सूचित) होवे कि कभी दर्शन हुए तो तुम्हारी सब सेहत हो जावेगी। ईश्वर भावना श्रेष्ठ देवें।

30-5-1944

हस्ताक्षर
मंगतराम
अज़ जंगल फैलां
रियासत कश्मीर
बज़रिया ऊपी लाईन
डाकखाना - चकोठी

32.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत प्रेमियों को रुहानी हालात बताने की मनाही

आज्ञाकारी सती-सेवक श्री किशनलाल जी,

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत्-बुद्धि देवें। प्रेमी जी, घबराने की ज़रूरत नहीं। फिर कोशिश सही करते रहें। प्रभु शायद दयालु होकर फिर अन्त:करण को रोशन कर देवें। इसमें ज़ोर किसी का नहीं चलता। उसी की दया होनी है। तुमको पहले जब यह समझा दिया गया था, मगर फिर तुमने महफ़िल (तमाशबीनीं) लगानी शुरू की तो अब पछताने के बजाय अपनी लगन को दृढ़ करते जावें। प्रभु की ज़रूरी कृपा होवेगी। छोटी अकल हाजमा कहां से लाए। अब अपनी ग़ल्ती को समझकर आइन्दा ज़्यादा अभ्यास में प्रेम धारण करें और जबान पर मौहर लगा देवें - गैब (अन्दर) के हालात की। तब ही प्रभु जी क्षमा करके फिर सत्-शांति की झलक (प्रकाश) शायद अपनी अपार दया से दिखलायें। ईश्वर सत्-विश्वास देवें। प्रेमी जी, बासमझ होकर पूर्ण जब्त (संयम) से इस मार्ग में चलें, तब ही शांति को हासिल कर सकोगे। ईश्वर नित ही रक्षक होवें।

हस्ताक्षर
मंगतराम
अज़ अबोहर मंडी

33.
श्री सत्गुरुदेव महाराज जी द्वारा प्रणीत ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के स्वाध्याय एवं पाठ सम्बन्धी नीति

1. किसी भी प्रोग्राम में ग्रन्थ का पाठ सत्संग की नीति अनुकूल आरम्भ तथा समाप्त करना योग्य है।

2. किसी भी प्रोग्राम में सम्पूर्ण ग्रन्थ को समाप्त करने का निश्चय रखकर पाठ दिन-रात करने पर मुमानियत (निषेध) है। इससे निर्मल स्वाध्याय का भाव समाप्त हो जाता है, सिर्फ़ व्यवहार मुताबिक नीति बन जाती है, जो कि सही धर्म के अनुकूल नहीं है।

3. निमित्त काल पाठ यानि अखण्ड-पाठ, साप्ताहिक पाठ, अर्धमासिक पाठ या मासिक पाठ की भी मुमानियत (निषेध) है। यह भी एक मदवाद (अहंकार) का निश्चय होने के कारण निर्मल स्वाध्याय का स्वरूप ख़त्म (समाप्त) कर देता है और एक व्यवहार मात्र ही रह जाता है।

4. नित्य-काल-पाठ यानि आम समय के मुताबिक सत्संग नीति अनुकूल पाठ शुरू करना और ख़त्म करना और सिर्फ़ ज़्यादा से ज़्यादा निश्चय (निश्चित) समय के मुताबिक (अनुसार) कुछ प्रसंगों का सम्पूर्ण करना ही शान्तिमय कल्याणकारी पाठ है इससे निर्मल स्वाध्याय कायम रहता है और ख़्वाहे (चाहे) इसी तरह रोज़ाना स्वाध्याय करते करते तमाम ग्रन्थ को ख़त्म

(समाप्त) कर दिया जावे। ऐसा स्वाध्याय समता (समता सिद्धान्त) के अनुकूल है।

5. वाणी (वाणी) के सम्बन्ध में ऐसा निश्चा (निश्चय) दृढ़ रहना चाहिए जिससे ईश्वर पूजा और सत् कर्तव्य की पूजा बढ़ती जाये जो निर्मल कल्याण के देने वाला भाव है।

6. वाणी का स्वाध्याय अन्त:करण की शुद्धि के वास्ते है जिससे सत्-कर्तव्य में प्रवीण हो करके मानसिक दोषों का नाश किया जावे। ऐसा निश्चा (निश्चय) श्रोताओं और पाठकों का होना चाहिए।

7. जब महज़ (केवल) वाणी का पाठ ही करना कल्याण समझ लिया जावे और सत् कर्तव्य के पालन करने में कायरता धारण कर ली जावे, तब कथनी मात्र सत् धर्म के नाश करने वाला हो जाता है।

8. समता (समता सिद्धान्त) की नीति में वाणी का स्वाध्याय महज़ (केवल) अन्त:करण की शुद्धि के वास्ते करना ही योग्य है, जो सत्-कर्तव्य में दृढ़ निश्चित करे। इस भावना के बग़ैर (बिना) महज़ पाठ करना (बार-बार दोहराना) या सत् कर्तव्य या सत् निध्याय (निदिध्यास) की धारणा से हीन होना समतावादी सज्जन और किसी पाठक सज्जन के वास्ते पूर्ण श्रेष्ठ सफलता के देने वाला निश्चय नहीं है।

9. किसी समय या किसी प्रोग्राम में ग्रन्थ श्री समता प्रकाश का पाठ नीति अनुकूल ही शुरू करना और ख़त्म करना योग्य है और

प्रसंग मात्र को सम्पूर्ण करना ही पाठ की सम्पूर्णता है, ख़्वाहे (चाहे) इस तरह सत्संग स्वाध्याय करते करते तमाम ग्रन्थ को सम्पूर्ण कर दिया जावे। ऐसे निर्मल स्वाध्याय से बुद्धि निर्मल हो करके सत् परायण होने का यत्न करती है और सहज ही तमाम संकटों और दोषों से कल्याण को प्राप्त होती है। ऐसा पवित्र निश्चा (निश्चय) सब को होना चाहिए।

10. ग्रन्थ श्री समता प्रकाश का इस सरल, सहज और पवित्र भाव के मुताबिक (अनुसार) स्वाध्याय करना तमाम तोहमात, विघ्न, दोषों और संकटों से छुटकारा देने वाला साधन है और सत्–वाद के निश्चा (निश्चय) को दृढ़ करने वाला है। ऐसा निश्चा (निश्चय) सबको होना चाहिए।

11. सत्वाणी (वाणी) का स्वाध्याय करना, (और) पूर्ण रूप से समझना और अमल में लाना ही सही पाठ की नीति है। ऐसे ही सब पाठकों और श्रोताओं को बोध होना चाहिए।

12. ग्रन्थ के मुत्तलिक (बारे में) जो पाबन्दियां (विधि निषेध) ग्रन्थ के आख़िर में तहरीर (लिपिबध) हो चुकी हैं उन पर पूर्ण रीति से कारबन्द (दृढ़) रहना चाहिए।

सब प्रेमी निर्मल स्वाध्याय 'ग्रन्थ श्री समता प्रकाश' के नियमों को समझ लेवें।

34.

ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के अन्तिम पृष्ठ पर श्री सत्गुरुदेव महाराज जी की चेतावनी

1. यह समता प्रकाश वाणी मूल वाक् शुद्ध सरूप (स्वरूप) लिखित है। किसी को अक्षर, चौपाई व श्लोक भंग करने की कोई समर्थ (सामर्थ्य अधिकार) नहीं है।

2. किसी किस्म की भी पूजा, भेंट, श्रृंगार और नुमाइश (दिखलावा) ग्रन्थ की मना है। सिर्फ श्रद्धा भाव से वाणी का श्रवण, मनन और निध्यासन (निदिध्यासन) करना ही कल्याणकारी है।

3. जब कभी ज़रूरत पड़े तो भिन्न- भिन्न भागों में भी वाणी की छपवाई कराने की आज्ञा है।

4. यह समता शास्त्र निश्चयात्मक भाव को प्रकाशने वाला है और सत्-पुरुषार्थ जीवन उन्नति के देने वाला है।

   सत्-भाव से प्रबोधित (जागृत) करना परम सफलता (सफलता) है। सरब (सर्व) साक्षी सरूप (स्वरूप) परमेश्वर की आज्ञा सम्पूर्ण हुई।

मंगतराम
निवास सिद्ध खड्ड मसूरी
दिनांक बैशाख संक्रान्ति सम्वत् 2005 विक्रमी

35.

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी का एक जिज्ञासु प्रेमी से भिक्षु सम्बन्धी वार्तालाप जो भगत बनारसी दास जी के संग्रह से संकलित है।

1. प्रेमी पंडित मायाराम जी – किशतवाड़ निवासी (जम्मू कश्मीर स्टेट) के श्री सत्गुरुदेव महाराज जी से श्रीनगर (कश्मीर) में हुए वार्तालाप के कुछ अंश जो भगत श्री बनारसी दास जी ने दिनांक 26-6-1960 को लिखकर अपने रिकार्ड में रखे-

   प्रेमी मायाराम प्रणाम करके श्री सत्गुरुदेव महाराज के चरणों में बैठ गया।

श्री सत्गुरुदेव – ''प्रेमी क्या सोच रहे हो?''

प्रेमी मायाराम – महाराज जी! मेरे पर भी कृपा की जाए और सेवा के लिए चरणों में जगह भी दी जाये।

श्री सत्गुरुदेव – ''पहले घर वालों को तिलांजलि दे आओ फिर 'भिक्षु' बनना। ब्राह्मण के तुम बच्चे हो। तुम्हारा कर्तव्य है संगत की सेवा करना और ईश्वर की याद करना। क्या तुम मांस-शराब वग़ैरा खाते-पीते हो?''

प्रेमी मायाराम– महाराज जी! बहुत कम खाया है। अन्दर से अच्छा नहीं लगता। किसी वक़्त संगत की वजह से खाना पड़ता है, आज से फिर नहीं खाऊंगा।

श्री सत्गुरुदेव– ''सेवादार बनना बड़ा मुश्किल है। प्रेमी! इधर से कोई तनख़्वाह वग़ैरा नहीं मिलेगी। जो गुरु दरबार में साग-भाजी मिले उसे खाकर समां (समय) गुज़ारना होगा। पहले सोच लो। पहले ज़माने में जब कभी किसी को सेवा में लेते थे, कान काटकर उसकी परीक्षा की जाती थी, फिर 12 वर्ष तक सेवा करवा कर दीक्षा देते थे। 'भिक्षु' बनना कोई आसान नहीं है। 'भिक्षु' को चाहिए घर से कम से कम 5-10 मील के फासले पर जाकर निवास करे। घरवालों को बिल्कुल याद न करे। जो कुछ अपने पास सरमाया, धन-दौलत हो सब गुरु अर्पण कर देवे या ग़रीबों में तकसीम कर देवे। फिर बेआस होकर धर्म-मार्ग में क़दम रखे। आजकल की तरह नहीं कि जो सरमाया वग़ैरा हुआ सब घरवालों के नाम करवा कर आप दूसरों की रोटियों पर पड़ जावे। अगर घर वालों का कोई ख़्याल हो तो पहले उनकी सेवा कर लो। तुमसे 'ये' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) सरमाया नहीं मांगते, न ही तुम्हारे पास कुछ होगा। अगर फिर घरवालों का जाकर चाकर बनना है तो पहले ही सोच लो। 'इनको' (श्री सत्गुरुदेव महाराज को) तेरी ज़रूरत नहीं है। तुझे अपने कल्याण की ज़रूरत है तो विचार कर ले। किसी भेष में तुमको नहीं डालना है। सेवा, सिमरण करके समां (समय) व्यतीत करो। अच्छी तरह विचार करके पता देना फिर समां मिलेगा। जल्दी की कोई बात

नहीं है। अभी कुछ समां (समय) इधर ही हैं।''

2. एकान्त निवास – अगस्त, 1953

स्थान – तुलतुलिया – केलाघाट, राजपुर, जिला देहरादून

श्री सत्गुरुदेव जी महाराज रिस्पना नदी के किनारे केलाघाट, राजपुर नामक स्थान पर एक तम्बू में एकान्तवास कर रहे थे। उन्हीं दिनों प्रेमी भाई (स्वर्गीय) श्री ओम प्रकाश शिंघाड़ी श्री सत्गुरुदेव महाराज जी के सानिध्य का लाभ उठाने देहली से पधारे। उनका श्री सत्गुरुदेव महाराज से भिक्षुओं के बारे में संग्रहित संवाद निम्न प्रकार है:–

प्रेमी– महाराज जी! आख़िर आपके शरीर का एक न एक दिन अन्त हो जाना है, तो आप इस तालीम (समता सिद्धान्त के प्रचार एवं प्रसार) का क्या हशर (भविष्य) देखते हैं। आने वाले ज़माने में 'समता' की तालीम कैसे फैलेगी?

श्री सत्गुरुदेव – ''प्रेमी ये तालीम 'भिक्षुओं' के ज़रिए फैलेगी।''

प्रेमी– महाराज जी! आपके इर्द गिर्द जो भी लोग आये हैं, वे तो सब गृहस्थी हैं। तो आपका विचार है कि सब लोग 'भिक्षु' बन जायें?

श्री सत्गुरुदेव– ''नहीं प्रेमी! ऐसा नहीं है, बल्कि वे अपने गृहस्थ जीवन में 'भिक्षुओं' जैसी ज़िन्दगी बसर (व्यतीत) करें और जब अपनी ज़िम्मेवारियों (दायित्व) को

ख़त्म कर लें तो वे अलग (विरक्त जीवन जीने वाले) भी हो सकते हैं, 'भिक्षु' बन सकते हैं। प्रेमी! जब सूरज चमकेगा तो दुनिया ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) देखेगी।''

36.

श्री सत्गुरुदेव महाराज ने कुछ हिदायत (आदेश) प्रेमी पंडित बिहारीलाल ऋषि को कलेशर बंगले के बाहर पुलिया पर बैठकर दिनांक 30-3-1950 मुकाम ताजेवाला में लिखवाई थी, जब वह सुबह सैर के लिए जाया करते थे। उन दिनों श्री सत्गुरुदेव महाराज हथनीकुण्ड स्थित डाक बंगले में सर्वेन्ट क्वाटर्स में ठहरे हुए थे। यह प्रसंग पंडित बिहारीलाल जी ने लिखकर भेजा था

1. 'इनके' (श्री सत्गुरुदेव महाराज) बाद (शरीर लोप होने के बाद) किसी चीज़ पर अपनी मलकीयत (स्वामित्व) न जतानी। संसार यानि जग के सब प्राणियों को 'संगत समतावाद' जानें। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई या दीक्षा लिए हुए प्रेमियों में तमीज़ (भेद-भाव) न समझें। समता लिटरेचर यानि ग्रन्थ, वाणी सब जग के लिए प्रकट हुई जानो। जायदाद यानि ज़मीन के इन्तज़ामात (प्रबन्ध) के वास्ते बड़ी लम्बी स्कीमें (योजनाएं) बनाना रूहानियत (आध्यात्मिकता) के असूल (सिद्धान्त) के मुआफिक (अनुकूल) नहीं है।

2. 'आश्रम' इस ग़र्ज़ (उद्देश्य) से कायम हुए हैं और होंगे कि जिनमें संगत एकत्र होकर ख़्यालात (विचारों) की एकता,

कोशिश (प्रयत्न) की एकता यानि आपसी मेल-मिलाप और अपनी बेहतरी (उन्नति) व अपने कल्याण की ख़ातिर सोचे। रिटायर्ड शुदा (अवकाश प्राप्त) प्रेमी सज्जन दुनियावी कामों से फ़रागत (निवृत्ति) पाकर यानि वक़्त निकाल कर तप की ख़ातिर रह सकें। सत्पुरुषों के बाद चालाक शिष्य लोग बाइसे बदनामी (अपयश) कारण बन जाते हैं। कई तरह की ग़र्ज़ें (स्वार्थ) खड़ी कर लेते हैं।

3. मौजूदा (वर्तमान) वक़्त (समय) में ब्रह्म-विद्या (आध्यात्मिक विद्या सम्पन्न उच्च स्तरीय चलन एवं दर्शन) की ख़ास मांग (विशेष चाह) नहीं है।

4. समता की तालीम (समता सिद्धान्त के विचार) मुकम्मिल तौर (सम्पूर्ण तौर) पर तहरीर में आ चुकी है और कुछ लिखने लिखाने की ज़रूरत नहीं रही, जैसा कि ईश्वर आज्ञा हुई है। अब सिर्फ़ (केवल) 'सेवादार भिक्षुओं' की ज़रूरत है जो सदाचारी, परोपकारी, पूर्ण त्यागी और समय का बलिदान करने वाले हों और हर तरफ जाकर समता के असूलों का प्रचार करें। अपने उच्च जीवन यानि अमली ज़िन्दगी से और जीवों पर असर-अन्दाज़ (प्रभावकारी) हों। पांच मुख्य साधनों (सादगी, सत, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण) पर ख़ुद आमिल (चलने वाले) हों और दूसरों को चलायें।

5. प्रधानता व बड़ाई उसको ही नसीब (प्राप्त) होगी जो कि तन, मन, धन पब्लिक सेवा में अर्पण करेगा। निष्काम भाव से दिल में सोते - जागते, उठते - बैठते दूसरों का दर्द समझने वाला हो और हर छोटे बड़े के वास्ते दिल में प्रेम रखता हो। हत्ता की (यहां तक

कि) अपने – पराए की तमीज़ (भेद–भाव) ख़त्म हो जावे।

6. नुक्ताचीनी (कटाक्ष) या दूसरों की ऐबजोई (आलोचना) करने का किसी को कोई हक नहीं है। क्या तू कोई ठेकेदार दुनिया का है, अपनी ऐबजोई (आत्मनिरीक्षण) कर। दूसरों को अपनी (उनकी) ग़लती का एहसास अपने त्याग भाव और अपने अमली जीवन से कराओ। समता की स्टेज (मंच) से किसी के ख़िलाफ़ (विरूद्ध) कुछ भी कहना बिल्कुल अच्छा न समझें तथा ऐसा कोई काम ख़ुद (स्वयं) न करें जिससे समता की तालीम (विचारधारा) पर धब्बा (लांछन) आवे।

भिक्षुओं का कर्तव्य

भिक्षु संसारी लोगों से बुराईयों को छुड़ावें। उलट तरीके से रायज (प्रचलित) पूजाएं और गलत कथाओं की जगह समता लिटरेचर (साहित्य) पहुँचाएं। फैशन, सिनेमा, सिगरेट, तम्बाकू, मांस (एवं) मदिरा छुड़ाने लायक चीज़ें छुड़ाकर सादा खावन, सादा लावन इख़्तियार (धारण) करवाकर, बाकि बचत पब्लिक सेवा में ख़र्च होनी चाहिए। पब्लिक सेवा के प्रोग्राम संगत सोचे। मुस्तहक (अधिकारी) की इमदाद (सहायता) तालीम (शिक्षा) पर ख़र्च, बेकारी हटाने में सहायता– ऐसे–ऐसे अमली शुभ कर्म ही ईश्वर–भगति व गुरु भगति समझें।

37.
भिक्षु नीति
पूज्य सत्गुरुदेव महाराज जी के आदेश अनुसार संगत समतावाद की भिक्षु नीति

पूज्य सत्गुरु महाराज मंगतराम जी का आदेश :-

जनता के उद्धार के लिए आध्यात्मिक विचारों का काफी ज़्यादा संग्रह हो चुका है और काफी लोग इन विचारों का लाभ उठा रहे हैं। अब केवल ऐसे श्रेष्ठ भिक्षुओं का जीवन देश के सामने आना चाहिए जो पूर्णतया सत्ग्रही भावना रखने वाले और सत् में अपने आपको बलिदान देने वाले हों। जैसा कि इस वक़्त आध्यात्मिकवाद नुमायशी और बनावटी रूप इख़्तियार कर चुका है। भ्रष्टाचार और भोगवाद का अति संघर्ष फैल रहा है और तमाम मनुष्य इस भयानक प्रकृतिवाद के चक्र में मजबूर हो रहे हैं, उन सब का सुधार केवल सत्ग्रही और अधिक सत् आचारी पुरुषों के आदर्श जीवन से ही हो सकता है। वैसे बनावट और नुमायशी जीवन से कुछ भी कल्याण नहीं हो सकेगा, बल्कि नास्तिकवाद दिन प्रति दिन फैलाव की सूरत इख़्तियार करता जावेगा। अतः ऐसे गुणवान सत्वादी और त्यागी सज्जनों के सत् और त्याग की इस समय में परीक्षा है, जो सर्व शान्ति को प्रकाशने वाले हैं। सब प्रेमियों को इन विचारों का बोध होना चाहिए।

समतावाद का फैलाव तभी हो सकता है जब ऐसे सही भिक्षु समता को अपनाने वाले परगट होवें और अपने क्रियात्मिक जीवन

द्वारा दूसरों के ममता के अन्धकार को दूर करें। शिक्षा भी ऐसी हो, जिनसे बच्चों को उच्च आचरण और समता का बोध होवे।

समतावादी भिक्षुओं के आचार सम्बन्धी नियम और उप-नियम

पूज्य श्री सत्गुरुदेव महाराज जी के आदेशानुसार समता की तालीम (विचारधारा) को फैलाने के लिए और संगत में आदर्श जीवन पेश करने के लिए संगत समतावाद निम्नलिखित भिक्षु नियुक्त नीति स्थापित करती है। इस नीति के अनुसार ही भिक्षु आइन्दा नियुक्त किये जावेंगे।

भिक्षुओं की श्रेणियां:

प्रथम श्रेणी : इस श्रेणी में दो प्रकार के भिक्षु होंगे।

1. गृहस्थी 2. विरक्ति

इनके गुण इस प्रकार होंगे:-

1. समता के पांच मुख्य साधनों-सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण को दृढ़ता पूर्वक अपनाने वाले होवें।
2. जिसका जीवन सदाचारी होवे और जो दुराचारी आदतों से पूरा पूरा परहेज़ रखने वाला होवे जैसे सिनेमा थियेटर, रास, शतरंज, ताश, चौपड़ जुआ, नाजायज़ मुनाफाखोरी व सूदखोरी तथा रिश्वतखोरी इत्यादि। इसके अलावा तमोगुणी आहार जैसे शराब, मांस, तम्बाकू आदि से परहेज़ करने वाला होवे।
3. जो श्रद्धा सहित सत्संग में आकर तन, मन, धन से नित्य ही सेवा

में प्रवीण रहने वाला होवे।

4. जो हर समय सेवा कार्यों में निष्काम और निर्मान भाव को धारण करने वाला होवे।

5. जो सब कुछ ईश्वर आज्ञा में देखने वाला होवे।

6. जो निश्चित रूप से अपने समय और आमदनी का दसवां या अधिक भाग सत् कार्यों में लगाने वाला होवे।

7. जो श्री सत्गुरुदेव महाराज जी की आज्ञानुसार नियमित सत् सिमरण का अभ्यास करने वाला होवे।

8. जो कुछ समय के लिए एकान्तवास का स्वभाव बनाने वाला होवे।

9. जो निष्पक्ष हो कर रहे और किसी की चुगली, निन्दा न करने और न सुनने वाला होवे।

10. इस श्रेणी के विरक्त भिक्षु में केवल इतना ही अन्तर रहेगा कि वह गृहस्थ को छोड़कर संगत समतावाद द्वारा स्थापित आश्रमों में निवास करे और आश्रमों के नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाला होवे।

दूसरी श्रेणी के भिक्षु के गुणः-

ऊपर लिखित श्रेणी का भिक्षु जैसे प्रगति करता जावे वह दूसरी श्रेणी का अधिकारी होगा। उसमें प्रथम श्रेणी वाले भिक्षु के गुणों के अलावा निम्नलिखित गुण भी होंगे।

1. तुच्छ से तुच्छ सेवा को स्वीकार करने और उसको चाव और शौक से पूरा करने एवं निष्काम भाव को रखकर आश्रमों की देख भाल और आश्रमों में आये हुए प्रेमियों की पूछताछ और उनकी सेवा करने वाला होवे।

2. जो गुरु वचनों में दृढ़ निश्चय धारण करके गुरु मार्ग में दृढ़तापूर्वक चलने वाला होवे।

3. जो निर्मान भाव धारण करके अपने अवगुणों का विचार करता हुआ उनको दूर करने का यत्न करने वाला होवे।

4. जो भोजन केवल सादा और दिन में एक ही बार करे ओर सादा लिबास केवल शरीर को ढकने के लिए ही रखने वाला होवे और हजामत 15 दिन के पश्चात ही करवाने वाला होवे।

5. वर्ष में कम से कम एक महीना एकान्तवास करे और अधिक समय सिमरण अभ्यास में ही व्यतीत करने वाला होवे।

6. इस श्रेणी का विरक्त साधक, गृहस्थियों के घरों में न ठहर कर केवल सत्संगों के लिए आबादी में जाने वाला होवे।

7. हर एक जीव मात्र से प्रेम करने वाला और किसी को दु:ख देने की भावना अपने अन्दर न रखने वाला होवे।

8. कोई दिखलावे वाली रचना न बना कर समता की तालीम को मन, वचन और कर्म द्वारा अपनाने वाला होवे।

9. इस श्रेणी का विरक्त भिक्षु अपनी सेवा आप करने वाला होवे और महिलाओं से किसी प्रकार की सेवा न करवाने और न लेने

वाला होवे।

तीसरी श्रेणी के भिक्षु के गुण :-

पूर्व लिखित गुणों वाला भिक्षु निष्काम सेवा को अपनाते हुए सत् सिमरण में जैसे - जैसे अधिक रूचि बढ़ाता जावे और सत् मार्ग पर प्रगति करता जावे, वह भिक्षु इस श्रेणी का अधिकारी होगा। उसके गुण इस प्रकार होंगे:-

1. वह प्रभु भाने को दृढ़ करने वाला होवे।
2. वह कोशिश करके किसी भोग पदार्थ को प्राप्त नहीं करेगा। प्रारब्ध कर्म अनुसार ईश्वर आज्ञा से जो कुछ प्राप्त होवे उसे ज़रूरत के मुताबिक ग्रहण करेगा और बाकी सब बांटने वाला होवे और एक पैसा भी अपने पास न रखने वाला होवे।
3. अधिक से अधिक समय संगत सेवा में और सिमरण में बिताने वाला होवे।
4. वह 40 दिन से लेकर 80 दिन तक एकान्त में ठहरने का अलग प्रोग्राम बनाये और इस प्रोग्राम में अधिकतर फाका-कशी या सूक्ष्म आहार पर रहने वाला होवे।
5. अति क्षमावान रहनी वाला होवे।

चतुर्थ श्रेणी के भिक्षु के गुण

जो भिक्षु ऊपर लिखित गुणों में प्रवीण रहेगा और सत् सिमरण में अधिक परिपक्वता धारण कर लेगा वह संसार से अति उदास रहने

लग जावेगा। यहां तक कि उसको अपने शरीर को पालने का फिकर भी नहीं रहेगा और न ही उसका संसारी सम्बन्धों से कोई लगाव रह सकेगा। हर वक़्त अभ्यास में ही लीन रहना चाहेगा, ऐसा करते हुए उसकी मन और बुद्धि ध्यान अवस्था में लीन हो जावेगी और अन्तर में मालिक की मौज में रहने लगेगा। ऐसा साधक भिक्षु इस श्रेणी का अधिकारी होगा। उसके अन्दर आप से आप यह गुण परगट हो जावेंगे।

1. ईश्वर आज्ञा में अति दृढ़ हो जावेगा और हर्ष शोक में उसकी वृत्ति सम हो जावेगी। उसका कोई मर जाए तो शोक नहीं होगा और पैदा हो जाए तो हर्ष नहीं होगा।

2. बुद्धि सम-भाव में स्थित हो जाएगी। सब संसार के मनुष्य मात्र को एक समान समझने लगेगा और सब के प्रति एक जैसा भाव रखेगा।

3. बिना यत्न के जो कुछ प्राप्त हो जाये उसी में सन्तोषवान रहेगा।

4. ऐसी अवस्था में मोह की कड़ी टूट जाती है। संसार की किसी वस्तु के साथ मोह नहीं रहेगा।

5. साल में काफी समय एकान्तवास में रहेगा और बाकी समय संगत में भ्रमण करके व्यतीत करेगा और सत् विचारों द्वारा संगत की सेवा करके समता सिद्धान्त का प्रचार अपने आदर्श असली जीवन द्वारा करेगा।

6. संगत की बुनियादी नीति मुत्तलका तंज़ीम व प्रचार की रहबरी व नियन्त्रण इस अवस्था के भिक्षुओं द्वारा उनकी देख रेख में होगी।

7. ऐसी अवस्था वाला भिक्षु ही जिज्ञासुओं को सत् मार्ग में चलाने वाला होगा। जैसा त्याग, वैराग और अनुराग जिज्ञासु के अन्दर देखेगा उसके अनुसार ही उसको सत् शिक्षा और सार बात समझाता जावेगा। परन्तु अपने आपको गुरु न कह कर सारी आयु सेवा के मार्ग में रहेगा क्योंकि गुरु बन कर सेवा करवाना ज़हर सरीखा है और मान मद में फंस कर अपनी तबाही आप कर लेगा।

भिक्षु नियुक्ति का अधिकार और उनका व्यय

श्री सत्गुरु आदेश अनुसार भिक्षु केन्द्रीय प्रबन्धक मण्डल में से ही चुने जाने चाहिएं जैसा कि उनका कथन है:

समता की तालीम को जागृत करने की ख़ातिर सेवादार भिक्षु मुकर्रर करने चाहिए। यह अधिकार केन्द्रीय प्रबन्धक मण्डल (सी.पी.एम.) को होगा कि वे भिक्षुओं की नियुक्ति मण्डल में से उचित गुणों को दृष्टि में रखते हुए करें।

भिक्षु मण्डल का समस्त व्यय का उत्तरदायित्व संगत समतावाद पर होगा और उनको केन्द्रीय प्रबन्धन की देख रेख के अधीन सेवा कार्य करना होगा।

38.
मृतक संस्कार के बारे में श्री सत्गुरुदेव महाराज के आदेश

1. जो मानुष (पुरुष एवं स्त्री) शरीर छोड़ने वाला हो उसके इर्द-गिर्द (आस-पास) बैठकर महामन्त्र का उच्चारण करें।

2. स्वांस के होते-होते (जब तक प्राण चल रहा है यानि प्राणी जीवित है) चारपाई से उतारने की कोई ज़रूरत नहीं। जब प्राण निकल जावें, उसको ज़मीन पर रख दिया जावे। स्नान कराके महामन्त्र करते हुए ही मृतक शरीर को चिता पर रख दिया जावे और अग्नि लगा दी जावे।

3. जब संस्कार हो जावे (यानि अग्नि पूर्ण रूप से चिता में जागृत हो जावे) महामन्त्र उच्चारण करके चिता पर थोड़ा जल छिड़क कर वापिस आवें।

4. बिरादरी जब रोज़ारा रात को घर में आवे (शोक सांत्वना के लिए) तो ईश्वर अरदास की जावे। ग्रन्थ श्री समता प्रकाश के समता स्थिति योग नामक प्रकरण से जीवगति सिद्धान्त प्रसंग का एक-एक अंग हर रोज सत्संग में पढ़ा जावे।

5. चौथे रोज श्मशान भूमि में जाकर महामन्त्र का जाप करके जब अस्थियां और राख इकट्ठी करके ख़्वाहे (चाहे) नदी हो या दरिया (महानदी) में बहा दी जावें। अगर नज़दीक पानी न होवे (पास में कोई नदी या महानदी न होवे) तो ज़मीन में किसी जगह दबा देवें। धरती की चीज़ धरती के हवाले।

6. ग्यारहवें दिन हस्ब तौफ़ीक (यथाशक्ति, यथासम्भव) दान करके पांच आदमियों से बीस तक (5 से 20 आदमियों तक) जायज़ (उपयुक्त) आदमियों को भोजन खिलावें। अगर बिस्तर वग़ैरा देना हो (कोई मजबूरी नहीं है, यदि देना चाहे) तो जायज़ (उपयुक्त) इस्तेमाल (प्रयोग) वाली जगह दिया जावे (उपयुक्त स्थान एवं अधिकारी पात्र को दिया जावे)।

7. ग्यारहवें दिन सुबह (प्रात:काल) दो घन्टे तक सत्संग करके थोड़ा प्रशाद तकसीम कर (बांट) देवें। अगर किसी की मर्ज़ी (इच्छा), हरिद्वार जाने की हो तो ख़ास मजबूरी नहीं (हरिद्वार जाना आवश्यक नहीं है यदि जाना चाहे तो जा सकता है) इजाज़त है। मगर वहां कोई फ़ालतू कर्म नहीं करवाएं। यह निश्चय दृढ़ करें।

39.
विवाह नीति

1. दुनियावी रस्मों-रिवाज यानि शादी और मौत की रीति बिल्कुल साधारण तरीके से अमल (प्रयोग) में लानी चाहिए, क्योंकि यह स्वार्थ कर्म का ज्यादा प्रपंच, परमार्थ यानि ईश्वरीय विश्वास को नाश कर देता है। जिससे समता बुद्धि मलीन हो जाती है और जीव परम दु:खी होता है।

2. समता-मार्ग में दुनियावी रस्मों रिवाज को बिल्कुल साधारण करना और शुद्ध रीति वाली रस्म बर्ताव में लाना लाजमी है। दीगर तमाम तोहमात का त्याग लाजमी है।

3. पुरातन समय में जो जो रीति रिवाज ऋषि-मुनियों द्वारा बनाये गये थे वे बहुत ही सादा रुप में थे। ज्यों ज्यों जमाना बदलता गया लोगों के हालात और विचार भी बदलते गए। सरलता और सादगी की जगह नुमाइशी हालत को धारण करके जीव आप ही दु:खी हो जाया करते हैं। चिन्ताओं, फिकरों से छुटकारा पाने के लिए मर्यादा और सादगी को धारण करना चाहिए। इस समय कई रीति रिवाज जीवों के वास्ते अजाब (दु:ख) बने हुए हैं। उनमें से एक रस्म शादी (विवाह) है। आसान और सादा तरीका अपनाकर इस शुभ कार्य को सम्पूर्ण कर देना चाहिए।

(महात्मा मंगत राम जी)

1. माता पिता का कर्त्तव्य बच्चों के प्रति

1. सबसे पहले औलाद को सदाचारी जीवन में रहने की हर समय हिदायत (शिक्षा) करते रहना चाहिए। खाना ऐसा पवित्र खिलाया जाए जिससे शारीरिक सेहत बनती जावे। पढ़ाई जिस कदर हो सके करवानी चाहिए। जिससे संसार का कारज भी चल सके और परमारथ की राह का भी पता लगता रहे। नुमाइशी जीवन की तरफ से रोकते रहें। लड़की को इतना जरुर पढ़ाया जाए जिससे धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों का अच्छी तरह विचार कर सके।

2. जब लड़की लड़का बालिग हो जाएं तो वालदैन (माता-पिता) को चाहिए कि अच्छी तरह विचार करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करवा दें।

2. सम्बन्ध जोड़ने के प्रति

1. वालदैन (माता-पिता) लड़की वाले या लड़के वाले दोनों मिलकर लड़के/लड़की के स्वभाव से अच्छी वाकफियत हासिल करें। उनके बोल-चाल, सूरत कद्दो-कामत देखभाल कर प्रेमभाव वालदैन (माता-पिता) समझ लें। क्योंकि हर इन्सान चाहता है कि बहु और दामाद अच्छा मिलें।

2. लड़का बारोज़गार जरुर होना चाहिए। चाहे माता पिता का धन-सामग्री बहुत क्यों न हो। लड़की घरेलू काम काज से अच्छी तरह वाकिफ हो और धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों का विचार

करने वाली हो।

3. लड़के से लड़की उम्र में पांच सा सात साल तक का फ़र्क देखकर (यानि छोटी हो) लेनी चाहिए। लड़का उम्र में 25 साल तक कम न हो। दोनों तरफ के वालदैन (माता-पिता) देख सुन कर जब अच्छी तरह राजी हो जावें, तब सम्बन्ध (सगाई) को पुख्ता (पक्का) करने के वास्ते वचन लेने देने के लिए एक दिन मुकर्रर कर लें। उस रोज के लिए सत्संग का प्रोग्राम बनाकर अपने सम्बन्धियों और मिलने वालों को एकत्र कर लें।

3. सगाई

1. अगर लड़के के घर लड़की वालों ने आना हो तो प्रसाद में मिलकर हिस्सा लें। लड़के वालों ने लड़की वालों के यहां जाना हो तो जैसा मुनासिब समझे करें।

2. दोनों तरफ के प्रेमी पहले मिल कर सत्संग के प्रोग्राम को सम्पूर्ण कर लें। फिर लड़की वाले जो बुज़ुर्ग साथ लाये हों आगे होकर, लड़के को पास बिठा कर महामंत्र (यानि ईश्व स्तुति) का उच्चारण करें और थाल में साथ लाई हुई सामग्री (सवा सेर गुड़ या मिठाई, सवा रुपया, पांच अदद छुहारे, जनेऊ, संदूर, हार) इत्यादि चीजों में से संदूर का तिलक लड़के को लगाकर मीठा खिला कर हार डाल दें और महामंत्र सम्पूर्ण करके प्रसाद बांट दे। उस समय कोई लेन देन का सिलसिला बिल्कुल न करें। कोई दिखलावे वाली बात नहीं होनी चाहिए। इस सिलसिले को सिर्फबात

(वचन) को पक्का करने के लिए किया जाता है। उस रोज से दोनों परिवारों के दरमियान अधिक प्रेम भाव बढ़ जाना चाहिए दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं रहना चाहिए। जो सलाह मशवरा करना हो मिल कर करना चाहिए।

4. मांग

1. लड़के को और लड़के के वालदैन (माता-पिता) को लड़की वालों से किसी चीज की चढ़ कर मांग नहीं करनी चाहिए। हर तरफ से फ़जूल खर्ची वाले रिवाज को बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। लड़के के वालदैन जो हमराज (साथ) मेहमान लावें उनकी पवित्र आहार द्वारा सेवा कर देनी आवश्यक है।

5. शादी

दोनों तरफ के चौधरी (बुजुर्ग) शादी का दिन मिल कर निश्चित करके जिस जिस को मुतला (सूचना) करना हो कर दें और उस रोज खुली जगह पर सत्संग का प्रोग्राम बना लें। लड़की-लड़के वाले एकत्र हो जावें। सत्संग का समय छः-सात बजे से लेकर आठ नौ बजे तक होना चाहिए यानि बारात सुबह के समय ही आवे। पाठ करने वाले के एक तरफ मर्द दूसरी तरफ औरतों का इन्तज़ाम होना चाहिए। लड़का-लड़की और उनके वालदैन (माता-पिता) पाठक के सामने ही थोड़ी दूरी पर बैठें। सत्संग में महामंत्र और मंगलाचरण के उच्चारण के बाद

केवल ईश्वर प्रार्थना का दोहरा शब्द आपस में मिल कर उच्चारण करें। फिर एक शब्द (नं. 993 जो पृष्ठ 781-782 पर है) प्रेम से पढ़ कर अच्छे समझदार प्रेमी से खोल कर स्वार्थ-परमार्थ के दोनों पहलुओं पर विचार समझाया जावे। सांसारिक, परमार्थिक दोनों रास्ते किस तरह तय किये जाते हैं। इस शब्द के बाद स्त्री पुरुष का अलग-अलग धर्म अच्छी तरह पढ़ कर लड़के/लड़की को सम्बोधित करते हुए समझाया जावे। बाकी सब सुनने वालों को भी स्त्री-पुरुष धर्म की याद (स्मरण) हो जायेगी। इस शब्द के बाद लड़के/लड़की से बारी बारी तीन तीन बार प्रण लेना चाहिए कि:-

1. सतगुरु महाराज जी की इस शिक्षा के अनुकुल ही जीवन यात्रा व्यतीत की जावेगी - यानी इन वचनों के अनुसार ही जीवन ढालने का यत्न करेंगे। हर रोज इस शिक्षा को पढ़कर अमल करेंगे (स्त्री-पुरुष धर्म की शिक्षा छपी हुई प्रसाद के रुप में दोनों को दी जावे)

2. जब लड़का/लड़की प्रण ले चुके तब लड़की के वालदैन (माता पिता) या भाई, सम्बन्धी लड़की को उठावें। लड़के को भी इसी तरह उस जगह सामने खड़ा कर देवें। लड़की द्वारा पहले नमस्कार करवा कर फिर फूलों की जयमाला बनी हुई लड़के को डलवा देवें। लड़की से कहलवायें:-

''आज से दासी आपके सुपुर्द है हर तरह से आपने आज

से मेरा ख़्याल रखना होगा।''

3. फिर लड़के से भी फूलमाला डलवायें और कहलवायें, ''आज से श्री महाराज (सतगुरु देव) की आज्ञानुसार चल कर मिल कर जीवन यात्रा सफल बनायेंगे।''

4. जिस समय फूल मालायें डालनी शुरु की जावें उस समय सब संगत महामंत्र का उच्चारण शुरु करें। जब लड़का फूलमाला डाल चुके तब महामंत्र सम्पूर्ण करें और लड़के और लड़की को वहां पर इक्ट्ठा बिठा दें।

5. इसके बाद ईश्वर महिमा के शब्द (482-483) प्रेम से पढ़ कर आरती और समता मंगल का उच्चारण कर सत्संग को समाप्त कर दें। प्रसाद संगत में तकसीम (बांट) कर दिया जावे। बाद में आये हुए मेहमानों को वहां ही दूध-चाय दे देनी चाहिए। लड़के लड़की को घर में दाखिल करा दें।

6. सत्संग का प्रोग्राम प्रातः छः-सात बजे से लेकर नौ-दस बजे तक रहना चाहिए। बाद में मेहमानों को लंगर खिला कर शाम को चार बजे लड़की को विदा कर देना चाहिए।

नोटः- 1. लड़के वालों को चाहिए कि उस रोज केवल लड़की को हमराह (साथ) ले जावें। लड़की वाले जो कुछ दे उसको बिल्कुल गुप्त रुप में साथ ले जावें या बाद में किसी वक्त ले जावें।

2. लड़की वाले जो कुछ दें बिल्कुल गुप्त रुप में दें। सिवाय

घर के सम्बन्धियों के किसी को न दिखावें। अर्थात् दहेज की नुमाइश बिल्कुल नहीं करनी चाहिए।

3. लड़के वालों को चाहिए कि कम से कम लेने की कोशिश करें।

6. बारातः-

लड़के वाले अपने हमराह (साथ) पांच मेहमानों को लाकर भी इस कारज को सम्पूर्ण कर सकते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा पच्चीस व्यक्ति हो जावें। कोई भी व्यक्ति इस प्रोग्राम के मुताबिक चलने वाला हो तो बड़ी इज्ज़त के साथ उसका आदर मान करें।

7. लंगरः-

शादी के रोज लंगर जो हो उसमें पांच से सात चीजों तक ही सीमित लंगर होना चाहिए।

1. रोटी/पूरी

2. हलवा /खीर

3. चावल

4. दाल

5. सब्जी

6. पापड़

7. अचार इत्यादि

ऐसे यज्ञ में कोई अपवित्र वस्तु आहार में शामिल न हो ।

दोनों तरफ के वालदैन (माता पिता) तथा समाज के लिए हिदायत

1. लड़के वाले अमीर हों तो उनको चाहिए जहां तक हो सके गरीब घर की सुशील लड़की से सम्बन्ध करने की कोशिश करें। लड़की वाले अमीर हो तो वो भी ऐसी कोशिश करें कि अच्छे पढ़े-लिखे सुशील किसी गरीब लड़के को सहारा देकर खड़ा करने की कोशिश करें। ऐसे सम्बन्ध करने से आपस में अधिक प्रेम बढ़ता है और संसार में मिसाल कायम होती है। किसी को ऐसा कारज करने में तकलीफ़ नहीं होती ।

2. सिर्फ शादी के कार्य को सम्पूर्ण करने के लिए अगर लड़के वाले या लड़की वाले कमज़ोर माली हालत में हो तो दोनों मिलकर इस (कार्य) को सम्पूर्ण कर सकते हैं । कमज़ोर तरफ को चाहिए कि निष्काम भाव से इस कारज को सम्पूर्ण करें।

3. अगर दोनों लड़की/लड़के वाले कमजोर हों तो संगत को चाहिए मिल कर ऐसे कार्य को सम्पूर्ण कर दें।

4. अगर शादी के रोज लंगर में पांच से लेकर बीस या पच्चीस व्यक्ति तक गरीब, यतीम की उसी लंगर से सेवा

हो जावे तो बहुत बेहतर है।

5. शादी के प्रोग्राम को पांच से दस प्रेमी भी मिल कर सम्पूर्ण कर सकते हैं। अगर सत्संग के लिये खुली जगह का इन्तज़ाम किसी से न बन सके तो शहर या गांव के धर्मशाला में इस शुभ कार्य को प्रेमी और दोनों तरफ के परिवार एकत्र होकर कर देवें।

6. अगर लंगर करने की ताकत लड़की वालों में न हो तो सब प्रेमी मिल कर ऐसे कार्य को सम्पूर्ण कर दें क्योंकि यह भी एक यज्ञ होता है।

7. सत्संगी प्रेमी गुरुमुख के वास्ते गुरुमुखों को ही अपनी बिरादरी समझें। लड़की सुशील और लड़का सदाचारी, बारोज़गार, मेहनती होना चाहिए। अगर जात बिरादरी वालों से ही अच्छा सम्बन्ध मिल जावे तो कोई पाबन्दी नहीं है। केवल रस्म शादी सत्संग करके सम्पूर्ण कर दें। प्रसाद लेकर चाय पीकर ही सब विदा हो सकते हैं।

भारतवर्ष में अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ हैं, जिनके बारे में जानकारी व अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी निम्नलिखित आश्रम से ली जा सकती है।

HEAD OFFICE:
SANGAT SAMTAVAD
SAMTA YOG ASHRAM
CHACHHRAULI ROAD
JAGADHARI-135003
www.samtavad.org

मुख्य ऑफिस :
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधरी - 135003
www.samtavad.org